

वार्षिक  
सदस्यता शुल्क  
100/-

# द्रविड भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र



गौतम बुद्ध

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर

अप्रैल-2026

वर्ष - 18

अंक : 03

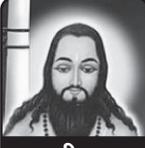
मूल्य : 5/-



संत कबीर दास



संत रविदास जी



घासीदास



बिरसामुण्डा



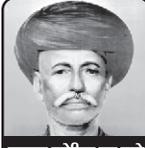
पेरियार रामास्वामी



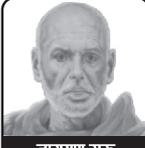
छत्रपति शाहजी महाराज



सन्त गाडगे



महात्मा ज्योतिबा राव फुले



नारयण गुठ



साक्षित्री बाई फुले



काशीराम

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subscribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

विभूति बोधिसत्व डॉ. भीमराव अम्बेडकर

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074

संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा),

मा. राम अवतार चौधरी (जलकल विभाग),

मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम

(दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621

राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :

सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.),

मो.: 9935363730, 9170836363

योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल)

मो.: 8299162841

हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख -

रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030

क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :

40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड,

कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631

ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :

राजकुमार, उन्नाव

मो.: 9889273743, 9392660070

हरियाणा राज्य :

डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-

बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), 09416347052

कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड.

यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह

राजपूत, एड. रामकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड.

सुशील कुमार, कानपुर

मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार

कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामदौरिया, जिला-छतरपुर

छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख

रमा गर्जभिंये, मो.: 7828273934

दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260,

हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई

दिल्ली-44, मो. : 09540552317

राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर,

दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने,

अलवर, जिला-अलवर-301001,

मो. : 09887512360, 0144-3201516

बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233

संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :

ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)

मो. : 9005204074, 8756157631

E-mail : dravinbharat1@gmail.com

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी

उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा

से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू

नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की

सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या

विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही

उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय

में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतः अवेतनिक

एवं अव्यवसायिक है।

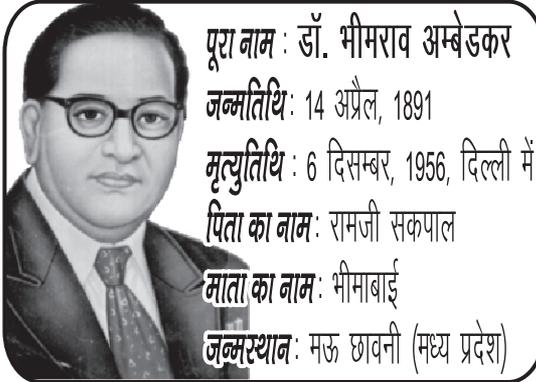
मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -

भारतीय स्टेट बैंक

पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर

खाता सं.-33496621020

IFSC CODE-SBIN0001784



पूरा नाम : डॉ. भीमराव अम्बेडकर

जन्मतिथि : 14 अप्रैल, 1891

मृत्युतिथि : 6 दिसम्बर, 1956, दिल्ली में

पिता का नाम : रामजी सकपाल

माता का नाम : भीमाबाई

जन्मस्थान : मरु छावनी (मध्य प्रदेश)

अपने बचपन से ही भूख-प्यास, अपमान - अन्याय, अत्याचार-अनाचार और सामाजिक विभीषिकाओं की त्रासदी झेलते हुए और अपने कठोरतम परिश्रम, त्याग, बलिदान एवं लगन के बल पर जिन महापुरुषों ने समय-समय पर भारत के गौरवमय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अपने-अपने अध्याय जोड़ते हुए नये आयाम-नई दिशाएं सुस्थापित की हैं, उनमें 'भारत-रत्न' बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का नाम प्रमुख है।

यद्यपि डॉ. अम्बेडकर को दलितों के मसीहा तथा भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पी के रूप में ही जाना जाता है, तथापि एक महान राष्ट्रीय एवं सामाजिक चिन्तक, लेखक, पत्रकार, अर्थशास्त्री, धर्मशास्त्री, निपुण राजनीतिज्ञ एवं संविधान विशेषज्ञ, ओजस्वी वक्ता, अभिवक्ता विधिवेत्ता, प्राध्यापक, राजनेता, कुशल प्रशासक, नारी उद्धारक, बौद्ध धर्म का पुनरोद्धारक और मानवतावादी के रूप में भी उनकी सेवाओं ने जो इतिहास रचा है, वह अजर-अमिट है। जो लोग उन्हें मात्र अपने तक सीमित रखना चाहते हैं वे वास्तव में बाबा साहेब के साथ घोर अन्याय ही करते हैं। ऐसा कदाचित्त इसलिए भी किया जाता है, क्योंकि वे सब उनकी विलक्षण प्रतिभा तथा बहुआयामी देशसेवा से निश्चय ही पूर्णतः परिचित नहीं हैं। पूज्य बाबा साहेब के महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व को वर्ग एवं समुदाय विशेष तक सीमित नहीं किया जा सकता है। वे मात्र एक राजनेता ही नहीं, बल्कि महापुरुष भी थे। वे एक महान राष्ट्रवादी देशभक्त, मानवतावादी, सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत, दलित मानवता के उत्थानकर्ता, समत्व के प्रतीक, जुझारू व्यक्ति और आधुनिक भारत के निर्माताओं में से एक महान व्यक्ति थे।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म मध्य प्रदेश के मरु छावनी में 14 अप्रैल, 1891 को महार जाति में हुआ था। उनके पिता का नाम रामजी सकपाल तथा माता का नाम भीमाबाई था। अछूत परिवार में जन्म लेने के कारण उन्हें बालावस्था से ही अपनी सामाजिक स्थिति का बोध होने लगा था। अपने पिता तथा बड़े भाई के संरक्षण एवं मार्गदर्शन से ही मेधावी बालक भीमराव ने अपनी तथा अपने जैसे लोगों की स्थिति को सुधारने हेतु भारी संघर्ष द्वारा जो अर्जित किया, उसे संक्षेप में व्यक्त करना संभव नहीं है। फिर भी उनके जुझारू एवं यशस्वी जीवन का व्यौरा इस प्रकार है :-

डॉ. अम्बेडकर एक दृष्टि में -

- 14 अप्रैल, 1891 : सूबेदार रामजी सकपाल एवं श्रीमती भीमाबाई की 14वीं संतान के रूप में, मध्य प्रदेश की मरु छावनी में जन्म।
- नवम्बर, 1900 : गवर्नमेंट वर्नाकूलर हाईस्कूल, सतारा में प्रवेश।
- जनवरी, 1908 : मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण।
- जनवरी, 1913 : बी.ए. उत्तीर्ण।
- जुलाई, 1913 : न्यूयार्क विश्वविद्यालय, में प्रवेश हेतु गायकवाड़ छात्रवृत्ति प्राप्त।
- 1915 : एम.ए. उत्तीर्ण।
- 1916 : 'नेशनल डिविडेन्ट ऑफ इण्डिया' पर पी.एच.डी।
- 1917 - कोलम्बिया विश्वविद्यालय से पी.एच.डी प्राप्त।
- जून 1917 ' महाराजा बड़ौदा (गायकवाड़) के सैन्य सचिव नियुक्त।
- नवम्बर, 1918 : हैडनहम कॉलेज ऑफ कामर्स एण्ड इकोनोमिक्स, बम्बई में पालिटिकल इकोनोमी के प्राध्यापक नियुक्त।
- जनवरी, 1920 : मराठी साप्ताहिक 'मूकनायक' का प्रकाशन।
- जून, 1923 : हाईकोर्ट आफ ज्यूडी केचर, बम्बई में वकालत शुरू।
- जुलाई, 1924 : दलितों के उन्नयन हेतु 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना।
- मार्च, 1927 : चावदार तालाब पर अछूतों को अधिकार दिलाने हेतु महाड़ में सत्याग्रह।
- अप्रैल, 1927 : पाक्षिक 'बहिष्कृत भारत' का प्रकाशन।
- जून, 1928 : 'गवर्नमेंट लॉ कालेज, बम्बई में लॉ के प्रोफेसर नियुक्त।
- मार्च, 1930 : नासिक के कालाराम मंदिर में अछूतों को प्रवेशाधिकार दिलाने हेतु सत्याग्रह।
- दिसम्बर, 1930 साप्ताहिक 'जनता' का प्रकाशन।
- 1932 : लंदन की 'गोलमेज सभा' के प्रतिनिधि नियुक्त।
- सितम्बर, 1932 ' रैमजे मैकडोनाल्ड के कम्युनल एवार्ड में अछूतों के पृथक निर्वाचन को त्याग कर महात्मा गांधी के साथ 'पूना पैक्ट' पर हस्ताक्षर, संयुक्त निर्वाचन स्वीकार।
- 1932-33 : इण्डिया कॉन्सटीट्यूशन रिफार्म कमेटी के सदस्य मनोनीत।
- जून, 1935 : गवर्नमेंट लॉ कालेज, बम्बई के प्राचार्य नियुक्त।
- सितम्बर, 1935 : नासिक जिले के 'वाला' में 'हिन्दू धर्म' त्यागने की घोषणा।
- अगस्त, 1936 : 'इन्डीपेन्डेन्ट लेबर पार्टी' की स्थापना।
- जनवरी, 1937 : बम्बई लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य निर्वाचित।
- अप्रैल, 1942 : 'आल इण्डिया शैड्यूल कास्ट्स फेडरेशन' की स्थापना।
- जुलाई, 1942 : गवर्नर जनरल ऑफ इण्डिया की कार्यकारिणी परिषद् में श्रम मंत्री मनोनीत।

- अप्रैल 1945 : 'पीपुल्स एजुकेशन सोसाइटी' की स्थापना।
- 1947 : भारत के संविधान की 'ड्राफ्टिंग कमेटी' में नियुक्ति।
- 1947 : नेहरू मंत्रिमण्डल में विधि मंत्री नियुक्त।
- नवम्बर 1948 : भारत के संविधान की 'ड्राफ्टिंग कमेटी' के अध्यक्ष के रूप में संविधान असेम्बली का मसवदा पेश।
- सितम्बर 1951 : 'हिन्दू कोड बिल' तथा अन्य मतभेदों के कारण 'नेहरू मंत्रिमण्डल' से त्यागपत्र।
- मई 1952 : राज्यसभा की सदस्यता।
- अक्टूबर 1956 : नागपुर बौद्ध सम्मेलन में बौद्ध

- धर्म की दीक्षा।
  - 6 दिसम्बर, 1956 : दिल्ली में अलीपुर रोड स्थित अपने निवास पर महा प्रयाण।
- प्रमुख कृतियाँ एवं रचनाकाल**
1. कास्ट इन इण्डिया (1916)
  2. स्मॉल होल्डिंग्स इन इण्डिया एण्ड देयर रेमेडीज (1918)
  3. द प्राब्लम ऑफ रूपी (1923)
  4. एनिहिलेशन ऑफ कास्ट (1935)
  5. फेडरेशन वर्सेज फ्रीडम (1939)
  6. रानाडे, गांधी एवं जिन्ना (1943)
  7. कम्यूनल डेडलॉक एण्ड वे टू साल्व इट
  8. व्हाट कांग्रेस एण्ड गांधी हैव डन टू अनटचेबल्स

- (1945)
9. पाकिस्तान एण्ड पार्टीशन आफ इण्डिया (1945)
10. स्टेट्स एण्ड माइनरिटीज (1947)
11. हिस्ट्री आफ इण्डियन करेन्सी एण्ड बैंकिंग (1947)
12. महाराष्ट्र ऐज ए लिंग्विस्टिक स्टेट (1948)
13. द अनटचेबल्स (1948)
14. थॉट्स ऑन लिंग्विस्टिक स्टेट्स (1953)
15. हू वेयर शूद्राज ? (1954)
16. राइज एण्ड फाल ऑफ हिन्दू वूमन
17. गोस्पेल ऑफ बुद्धिज्म
18. बुद्ध एण्ड हिज धम्म

## कृश नाभिक शक्ति तथा विद्युत कृश शक्ति

अभी तक लोगों को यही मालूम था कि अणु की नाभि में जड़तायुक्त धन विधा वाले प्रोटान है और जड़ताहीन ऋण विधा वाले इलेक्ट्रान प्रोटान की परिक्रमा में है। प्रोटान और इलेक्ट्रान के बीच शून्य स्थान है। प्रोटान तथा इलेक्ट्रान की आणविक संख्या समान होने पर तथा भार भिन्न होने की दशा में आइसोटोप के अस्तित्व का पता क्यूरी ने पहले ही लगा लिया था।

यह बहस बहुत समय तक चलती रही कि इलेक्ट्रान कण है या तरंग है। फोटान की उत्पत्ति से इस बहस का अन्त हो गया। अब प्रश्न यह है कि अणु विखण्डन कैसे होता है? अणु विखंडन कोई आसान प्रक्रिया नहीं है। अणु को खंडित करने के लिए बड़ी भारी शक्ति की आवश्यकता होती है। साइक्लोट्रान की सहायता से अणु विखंडन करते हैं। अणु विखंडन में बड़ी भारी ऊर्जा का निकास होता है। क्या कण के विखंडन में ऋण विधा वाले इलेक्ट्रान की उत्सर्जित होते हैं? इस प्रश्न सन् 1927 ई० में अंग्रेज भौतिक शास्त्री डिरांक ने एक पत्र प्रकाशित करके दिया। उसने बताया कि इलेक्ट्रान के साथ बिल्कुल उसके समान एक और कण उत्सर्जित होता है जो धन विधा धारक होता है उसे मेघ कोष्ठक में खोजा गया और उसे पोजीट्रान पुकारा। जब पोजीट्रान और इलेक्ट्रान मिलते हैं तब वे एक दूसरे को विनाश करके बड़ी भारी ऊर्जा उत्पन्न करते हैं। इलेक्ट्रान शाश्वत नहीं है। यह गायब हो जाता है और पुनः दिखाई पड़ जाता है।

कण तथा विरोधी कण का विचार अन्त में लाभदायक सिद्ध हुआ। सभी कण अपने साथी कणों को रखते हुये पाये जाते हैं जैसे प्रोटान व एन्टी प्रोटान और उनका विनाशीकरण सन 1930 ई० में बुल्गैंग पाली ने यह कल्पना की कि रेडियम तथा थोरियम की रेडियो एक्टिविटी में केवल इलेक्ट्रान या बीटा कण ही उत्सर्जित नहीं होते वरन् एन्टीन्यूट्रॉनों भी उत्सर्जित होते हैं जिनमें कुछ शक्ति सुरक्षित रहती है।

अभी तक उत्सर्जन के पश्चात् ही परमाणुओं की खोज ही रही थी। वैज्ञानिकों ने एन्टी न्यूट्रॉनों की कल्पना कर ली थी। परन्तु उभय विधा वाले न्यूट्रान के अस्तित्व का किसी को पता नहीं था। सर चाडविक ने सन् 1932 ई० में अणु में तीसरे कण न्यूट्रान के अस्तित्व का पता लगाया। यह कण उभय विधा धारक है। भौतिक शास्त्री बोर अणु शक्ति विखंडन की बात मानने को तैयार थे, पर तीसरे परमाणु की उपस्थिति को स्वीकारना नहीं चाहते थे। एटम बम के आर्किटेक्ट एनरिको फर्मी ने पाली की कल्पना को क्रियात्मक रूप से सिद्ध करने का बीड़ा उठाया।

फर्मी ने कहा कि जब अणु की नाभि में न्यूट्रान की संख्या अधिक होती तो वे रेडियोएक्टिव होने पर प्रोटान में बदल जाते हैं। इस अन्तरक्रिया में इलेक्ट्रान तो उत्सर्जित होते ही हैं पर पाली द्वारा कल्पित एन्टी न्यूट्रानों भी उत्सर्जित होते हैं। अणु विखंडन की प्रक्रिया तथा प्रकाश विकिरण प्रक्रिया में काफी सादृश्यता है। अणु विखंडन में ऊर्जा का वाहक फोटान है जबकि प्रकाश विकिरण में विद्युत चुम्बकीय शक्ति का माध्यम विद्युत चुम्बकीय विकिरण है। वास्तव में विद्युत चुम्बक या प्रकाश विकिरण है। वास्तव में विद्युत चुम्बक या प्रकाश विकिरण का सिद्धान्त सन् 1933 ई० में स्पष्ट रूप से समझा गया।

एनरिको फर्मी ने बीटाकरण के विनाश में एक ओर इलेक्ट्रान तथा प्रोटान की अन्तरक्रिया दूसरी ओर इलेक्ट्रान तथा एन्टी न्यूट्रानों के उत्सर्जन के सादृश्यता सिद्धान्त (Parity-Theory) का भली प्रकार प्रदर्शन किया। इसके पश्चात् अणु के क्षेत्र में काफी अनुसंधान हुये। जैसे जैसे वृहत्तर शक्तिशाली माइक्रोस्कोप तथा टेलिस्कोप का निर्माण होता गया जैसे जैसे ही अणु के पर्दे खुलते गये और ब्रह्मांड के भेद भी खुलते गये। आदमी की ज्ञानेन्द्रियों की अनुभूति का विस्तार बढ़ता गया।

तदन्तर अणु के परिवार में वृद्धि होती गई। आइन्स्टीन के सहकारी श्री सत्येन्द्रनाथ बोस ने अणु प्रतिक्रिया में फोटान के अतिरिक्त एक अन्य किरण का पता लगाया जिसको आइन्स्टीन ने श्री बोस के नाम से वेक्टर बोसान पुकारा। आइन्स्टीन ने परिमाण युक्तकणों को स्कैलर तथा परिमाणहीन वेग सूचक किरणों को टेन्सर की संज्ञा दी।

सन् 1956 ई० श्री सुदर्शन तथा प्रो० मार्शक ने भौतिकी कृश अन्तरक्रिया (Weak Interaction) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और कहा कि बीटा विनाश में और भी अधिक पेचीदा भौतिक कण अस्तित्व में आते हैं। इस सिद्धान्त की मान्यता से फर्मी की सादृश्यता कलह (Parity Crisis) का अन्त हो गया। क्योंकि बीटा विनाश में केवल इलेक्ट्रान तथा एन्टी न्यूट्रानों की उत्सर्जित नहीं होते वरन् और भी अन्य प्रकार के परमाणु उत्सर्जित होते हैं। उनके वेग में केवल परिमाण ही नहीं वरन् दिशासूचिका भी होती है जिसमें धुरी की परिक्रमा भी निहित है। उनमें से एक को धुरीधर वेक्टर कहते हैं। वेक्टर के समान टेन्सर होता है जिसमें परिमाण संख्या तथा दिशासूचिका भी है वें परिक्रमा में अपरिवर्तनीय हैं। इनके अतिरिक्त बीटा कण के उभय विधा वाले फोटान, वेक्टर बोसान की परिक्रमा करते हैं। इस प्रकार भौतिक शास्त्रियों ने अणु की नाभि में एक और परमाणु धुरी के अस्तित्व की अभिकल्पना की है।

तत्पश्चात् अनेक वैज्ञानिक अनुसंधान हुये। अणु के परिवार में बहुत से सदस्य हो गये। अणु का परिवार लेपटांस तथा हैड्रॉस नाम के दो परिवारों में बँट गया। लेपटांस छः प्रकार के होते हैं, जिनमें इलेक्ट्रान तथा न्यूट्रॉनों मुख्य है। दूसरी ओर हैड्रॉस दो प्रकार के होते हैं। बेरियांस की परिमाण संख्या होती है जिसे बेरियांस संख्या कहते हैं और वे अर्द्धचक्र करते हैं जबकि मेसांस परिमाण संख्याहीन होते हुये चकहीन हैं। हैड्रॉस को जड़ता, उत्पत्ति तथा विनाश गुण के कारण इस प्रकार समझा जा सकता है कि बेरियांस में तीन क्यूआर्क होते हैं जबकि मेसांस क्यूआर्क तथा विरोधी क्यूआर्क का जोड़ा है। क्यूआर्क का अस्तित्व द्विचकीय अवस्था है तथा उनके लस में विभिन्नता है। इनके लस छः प्रकार के होते हैं - ऊपर, नीचे, दृढ़, आकर्षक, तल एवम् चोटी। हैड्रॉन स्पेक्ट्रोस्कोपी में क्यूआर्क उसी प्रकार अपना पार्ट अदा करते हैं जिस प्रकार नाभिक स्पेक्ट्रोस्कोपी में न्यूट्रान तथा प्रोटान एवम् अणु स्पेक्ट्रोस्कोपी में इलेक्ट्रान तथा न्यूक्लियस सारांश यह है कि वर्तमान दृष्टिकोण के अनुसार क्यूआर्क तथा लेपटांस पदार्थ में मौलिक अंश हैं जो कि पूर्वोक्त चारों शक्तियों को बहन करते हैं, सिवाय इसके कि लेपटांस दृढ़ नाभिक शक्ति को बहन नहीं करते। वर्तमान दृष्टिकोण यह है कि लेपटांस ही पदार्थ का अन्तिम अंश है जिनको

फर्मी महोदय के नाम पर मौलिक फर्मियांस कहते हैं।

विद्युश (विद्युत चुम्बकीय शक्ति) का माध्यम विद्युत चुम्बक है जो कि फोटान कहलाता है। उभय विधा फोटान, वेक्टर बोसान की परिक्रमा में है। जिस प्रकार विद्युश का माध्यम फोटान है उसी प्रकार कृनाश (कृश नाभिक शक्ति) का माध्यम कृश वेक्टर बोसान है जिसमें धन एवम् ऋण विधा की इकाई होती है। रेडियोधर्मिता में उभय विधा न्यूट्रान, धन विधा प्रोटान में परिवर्तित होता है तब गामा किरण निकलती है अर्थात् फोटान  $y$  बाहर आते हैं तथा इसके समानान्तर धन तथा ऋण विधा वाले कृश वेक्टर बोसान  $W_{\pm}$  भी उत्सर्जित होते हैं। विद्युश जिस प्रकार विद्युत धारा से सम्बन्धित है, इसी प्रकार कृनाश कृश धारा एवम् वेक्टर बोसान  $W_{\pm}$  से सम्बन्धित है। अतएव विद्युश तथा कृनाश में आधारभूत एकता है। अब्दुल सलाम ने चतुर्थ नगण्य विधा वेक्टर बोसान  $Z^0$  के अस्तित्व का पता सन् 1978 से कुछ पहले ही लगाया तत्पश्चात् उन्होंने सुदर्शन तथा मार्शक के कृश अन्तर क्रिया सिद्धान्त का परिमार्जन किया। अब्दुल सलाम की कल्पना के अनुसार  $y, W_{\pm}$  तथा  $Z^0$  एक ही परिवार के सदस्य हैं और अपनी 2 विद्युत धारा से क्रमशः द्विगुणित होते हैं जिसकी शक्ति  $e$  है। इनकी गणित में क्रमशः इस प्रकार  $-e/2 \sqrt{2} \sin Qw$  एवम्  $e/2 \cos Qw$  प्रकट करते हैं। इस सिद्धान्त का मापक चिह्न  $Qw$  है पर आमतौर से इसे  $\sin^2 Qw$  से दर्शाया जाता है। अब्दुल सलाम तथा वेनबर्ग के सिद्धान्त के अनुसार वेक्टर बोसांस  $Z^0$  व  $W$  आवश्यक रूप से जड़युक्त (massive) है जबकि फोटॉस  $y$  जड़हीन (massless) हैं।

अब भौतिक शास्त्रियों को अपने ही काल्पनिक शून्य फोटान के साथ 2 जड़ता दिखाई पड़ना प्रतीत होने लगी। इस कारण अब्दुल सलाम वेनबर्ग ने एकीकृत क्षेत्र के सिद्धान्त का निर्माण किया। एकीकृत क्षेत्र के सिद्धान्त के अनुसार विद्युश तथा कृनाश एक ही मौलिक शक्ति के दो रूप हैं और इन दोनों शक्तियों में एकता है। वेक्टर बोसांस की जड़युक्तता के कारण कृश अन्तरक्रिया का क्षेत्र छोटा है जो दृढ़ अन्तरक्रिया का ही अंश है। सलाम-वेनबर्ग ने इन दोनों शक्तियों (विद्युश तथा कृनाश) को मिलाकर उसे विद्युत कृश शक्ति (Electro Weak Force) नाम से पुकारा है।

अबुम सलाम तथा वेनबर्ग ने एकीकृत क्षेत्र के अन्तर्गत एक नयी उभय कृश अन्तरक्रिया (Neutral Weak Interaction) के अस्तित्व का पता लगाया जिस पर उन लोगों को नोबेल पुरस्कार मिला। उनका कथन यह है कि अणु की नाभिक प्रतिक्रिया में जड़तायुक्त वेक्टर बोसांस (न्यूट्रॉनों) तथा जड़हीन फोटान का उत्सर्जन होता है। वेक्टर बोसांस न्यूट्रान के समान उभय विधा धारक होते हैं।

सभी प्राकृतिक शक्तियों की उपरोक्त विवेचना से वेगहीन जड़ता (स्थैर्य पिंड) तथा जड़युक्त वेग एवं जड़हीन वेग का अन्तर स्पष्ट अलकता है। जब यह बात है तो पदार्थ एवं गति की पृथकता भी स्पष्ट है।

सामार :  
शिक्षा के अहिंसक क्रांति  
पेज संख्या XXIII से XXX तक  
मूलचन्द्र विद्यार्थी

## प्राकृतिक चिकित्सा

ओ महान् दिनकर भास्कर, जीवन के मूल स्रोत, ऊर्जा के महान उद्गम, तुम्हें शत शत प्रणाम । तुम हमें हर दिन एवं हर वर्ष नित नवीन बनाते हो । संपूर्ण जगत के मानव, पशु एवं वनस्पति को हमेशा नया जीवन देते हो । शीतकाल में जब तुम्हारी किरणें मंद होकर हमारी पृथ्वी में आती हैं तब उसके प्रखर और तेज होकर हम तक पहुंचने की प्रतीक्षा करते हैं । क्या होगा, यदि तुम्हारी किरणें हमारी पृथ्वी पर नहीं पहुंचेंगी? यहां की हर चीज मर जायेगी, वनस्पति एवं पशु मर जायेंगे । पृथ्वी बंजर हो जायेगी । हम सभी अमावस की रात्रि जैसे गहन अंधकार में खो जायेंगे, आखिर तुम्हारी किरणें ही हमारी पृथ्वी की हर वस्तु को संभालती हैं, उन्हें जीवन देती हैं तथा उसका पालन - पोषण करके उनका विकास भी करती हैं, अतः हे प्राणदाता सूर्य तुम्हें फिर से शत - शत प्रणाम ।

उपरोक्त अंश अफ्रीका महाद्वीप के एक देश के लोकप्रिय पुराण कथन के आधार पर उद्धृत किया गया है । सूर्य जीवन का उद्गम है, बिना सूर्य प्रकाश के जीवन का अस्तित्व संभव नहीं है, अतः सूर्य की किरणों की लाभकारी शक्तियां महान हैं । सूर्य की किरणें संचार को गति देती हैं । लसिका प्रणाली को उनके कार्यों में मदद करती हैं । हृदय को बल देती हैं और मस्तिष्क को जागृत रखती हैं । सूर्य की किरणों के द्वारा हमारी त्वचा के भीतर विटामिन - डी तैयार होता है, जो कैल्शियम व फास्फोरस को रक्त संचार के उपयोग में लाने का काम करता है, जिससे हमारे रक्त का संगठन ठीक रहता है एवं शरीर की सारी अस्थियों को पोषण मिलता है । एक हल्का सूर्य प्रकाश स्नान स्नायविक कमजोरी, चिन्ता, उदासीनता, तनाव और कुंठा से ग्रसित व्यक्ति को स्वाभाविक स्वास्थ्य की ओर लौटा सकता है । सूर्य रश्मि में पाये जाने वाले पराबैंगनी किरणें श्वेत रक्तकण में वृद्धि करती हैं, जिसमें हमारी जीवनी शक्ति बढ़ती है तथा हम रोग संक्रमण से बचकर अच्छे स्वास्थ्य की ओर बढ़ते हैं । हर चीज की अति बुरी होती है । उसी तरह सूर्य किरणों का अतिसेवन भी बुरा है । सूर्य रश्मि के प्रयोग का समय देशकाल एवं व्यक्ति विशेष की आवश्यकता के अनुसार बदलते रहना चाहिये ।

ग्रीष्म ऋतु में विशेष तौर पर हमें किरणों के समक्ष रहने से सावधानी बरतनी चाहिए, ताकि हम सूर्य अतिसेवन के शिकार न हों, इसलिए आवश्यक है, कि हमारे शरीर में सूर्य किरणों के द्वारा पैदा किये गये अतिसार के संतुलन को बनाये रखने के लिये पानी का संतुलन बनाये रखना चाहिए, क्योंकि अधिक समय तक ग्रीष्म ऋतु में धूप में रहने पर शरीर से पसीना काफी मात्रा में निकल जाने के कारण रक्त में पानी की कमी की स्थिति पैदा हो जाती है, जो हमें कोई बीमारियों का शिकार बना देता है । रक्त में पानी की कमी होने पर पसीना निकलने की प्रक्रिया में रूकावट पैदा हो जाती है । यह पसीना निकलने की प्रक्रिया शरीर की गर्मी बढ़ जाने पर उसे अपने आप ठण्डा करने की प्रक्रिया है । इस प्रक्रिया द्वारा शरीर का औसत तापमान स्थिर रहता है । पसीना निकलने की प्रक्रिया के द्वारा हम अपने चारों ओर ताप नियन्त्रक वातावरण पैदा करते हैं । पूरे शरीर के स्वास्थ्य को बनाये रखता है, क्योंकि जो प्रदूषण रहित द्रव हमारे रोमकूपों के द्वारा निकलता है इससे हमारा शरीर ओजोन की परतों को बिना चीरे हमारे शरीर को ठण्डा रखता है । प्यास लगना हमारे रक्त में पानी की कमी का सही प्रमाण नहीं माना जाता, इसलिये हमें अपने मूत्र के हर रंग पर ध्यान देना चाहिए । यदि वह गहरा पीले रंग का है तो हमें पर्याप्त पानी की आवश्यकता है, लू लगना तथा लू लगने से पहले शरीर में झटके लगना रक्त में पर्याप्त पानी की कमी का प्रमाण है, साथ ही सोडियम की कमी का भी ।

इस तरह शरीर में द्रव की कमी व ताप की अधिकता से सिरदर्द, सिर का भारीपन, कमजोरी, उल्टी एवं उल्टेजना पैदा होती है । लू लगना, एक गंभीर स्थिति है, ऐसी हालत में लापरवाही करने पर मृत्यु भी हो सकती है । यदि लगातार धूप में रहने के कारण खूब पसीना निकलने पर हमें तीव्र प्यास लगती है तो वह रक्त में पानी की कमी के कारण ही होता है, इसके साथ ही भूख की कमी, सिरदर्द, चक्कर, जी मिचलाना एवं उल्टी की प्रक्रिया शुरू हो जाती है । लू लगने के दूसरे प्रधान लक्षणों में एक लक्षण है हृदय की धड़कन का बढ़ जाना ऐसी स्थिति में हमें तुरन्त छायादार स्थान पर जाकर विश्राम करना चाहिए, संभव हो

## ग्रीष्म ऋतु पर विजय

तो कमरे के भीतर ठण्डे स्थान में जाकर लेट जाना चाहिए तथा निम्न विधि से शरीर के ताप को संतुलन में लाने का यथाशीघ्र प्रयास करना चाहिए ।

ग्रीष्म ऋतु में घर से बाहर जाने पर हमेशा ठण्डे पानी की बोतल साथ रखना चाहिए, खासतौर पर धूप में बाहर जाने पर हमेशा ठण्डे पानी की बोतल साथ में रखना चाहिए, खासतौर पर धूप में रहकर बीच - बीच में हर आधे घण्टे में 100 से 120 ग्राम पानी पीते रहना चाहिए । हालांकि कई लोग घर से निकलते समय कई गिलास पानी एक साथ पी लेते हैं, लेकिन यह तरीका सही नहीं है, क्योंकि बिना आवश्यकता के पिया गया पानी शरीर पेशाब के जरिये यथा शीघ्र बाहर निकाल देता है, कई बार हमें तीव्र प्यास लगने पर पानी नहीं मिलने पर नारियल का पानी, फलों का रस, आम का पना, मट्ठा (छाछ) लिया जा सकता है । बहुत बार ऐसा होता है, कि हम धूप में काम करते हैं, या परिश्रम करते हैं और बाहर से हवा गर्म रहती है तब हमारी शर्ट अथवा अन्दर पहने हुए कपड़े पसीने से पूरी तरह गीले हो जाते हैं तथा बाहर की गर्मी गीले कपड़े को पार करके ठण्डा होकर हमारे शरीर में लगता है, जो हमें सुहाता है एवं शरीर के बड़े हुए तापमान को कम करता है, ग्रीष्म ऋतु में हमें अधिक से अधिक ताजे फलों एवं कच्ची साग - सब्जियों का प्रयोग भोजन में करना चाहिए, जिससे हमारे रक्त में खनिज, नमक व पानी का संतुलन बना रहे ।

ग्रीष्म ऋतु में कई लोग ठण्डे पेय पदार्थ के साथ अधिक नमक का प्रयोग करते हैं, लेकिन ऐसा करना इसलिये उचित नहीं है, कि रक्त में अधिक नमक की उपस्थिति पसीना पैदा करने के लिये प्यास को कम पैदा करती है, इसी तरह बीयर जैसे पदार्थ भी दूसरे मादक द्रव्यों की तरह लू लगने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है, क्योंकि इन पेय पदार्थ से भी रक्त में पानी की कमी पैदा हो जाती है, इसलिये उनके बदले में सादा पानी, फलों का रस या कच्चे नारियल का पानी पिया जा सकता है ।

ग्रीष्म ऋतु में जब सूर्य की किरणों का ताप सबसे अधिक होता है अर्थात् 40 से 47 डिग्री सेल्सियस तक चला जाता है, ऐसे समय में यह आवश्यक है कि हम अपने त्वचा की रक्षा भी करें, ऐसा नहीं करने पर त्वचा ढीली झुर्रीदार हो सकती है तथा उसका रंग गोरा है तो सांवला व सांवला है तो काला हो सकता है, त्वचा को इस अधिक ताप वाले सूर्य किरणों के सीधे संपर्क में रखने पर त्वचा के अंदर की नमी कम हो जाती है, जिससे त्वचा का वह भाग मोटा हो जाता है । जो आगे चलकर स्पर्श ज्ञान अर्थात् त्वचा की संवेदनशीलता को कम करता है । त्वचा में झुर्रियां आने लगती हैं, कई बार शरीर को बहुत अधिक सूर्य किरण में रखने पर कैंसर पैदा होने का खतरा भी हो सकता है, ग्रीष्म ऋतु में बहुत अधिक पसीना आने के कारण सारे शरीर में चकत्ते, पित्ती एवं घमौरियां पैदा हो जाती हैं । जिसके कारण पसीने का त्वचा के ऊपरी सतह में सुखकर रोमकूपों का बंद हो जाना है, जिससे पसीना सीधे त्वचा की ऊपरी सतह से रिसता है, इसलिये त्वचा ऊपरी सतह पर सारे शरीर में लाल चकत्ते आ जाते हैं तथा उसकी वजह से चकत्तों के स्थान पर खुजली और जलन होने लगती है । समझना यह है कि ये बारीक चकत्ते, घमौरियां तो नहीं हैं या फिर एक्जिमा की शुरुआत है । यदि हम ध्यान से देखें तो त्वचा में कई स्थान पर केवल छोटे लाल धब्बे व श्वेत ग्रन्थियां हैं, जिसके मुखों के ऊपर सूजन आ गयी है । उसी के ठीक आसपास जो घमौरियां पैदा हो जाती हैं । उनकी वजह से सुई चुभने जैसी चुभन होती है, ऐसी हालत में यथाशीघ्र सूखे स्थान पर जाकर खुली हवा के संपर्क में सारे शरीर को लाना चाहिए, जहाँ उमस न हो तथा खुली हवा तेज गति से बह रही हो, ढीले कपड़े हो खादी अथवा सूती कपड़े से बने हों, पहनने चाहिए । किसी भी तरह से रासायनिक पदार्थों से बने अर्थात् नायलोन, पालिएस्टर से बने कपड़े न हो व पहनने में चुस्त न हों । सारे शरीर में मिट्टी का लेप लगाकर 15 से 30 मिनट तक उसी हालत में रखें । आवश्यकता हो तो लेप लगाने से पहले मिट्टी में थोड़ी बर्फ भी मिलायी जा सकती है, ताकि मिट्टी ठण्डी लगे, मिट्टी से सारे शरीर में ठण्डक पैदा हो, जो शरीर के आवश्यक गर्मी को खींच

ले । लेप करने के बाद नीम पानी में स्नान करें । नीम पानी बनाने के लिये नीम पत्तों को पानी में उबालकर घड़े में डालकर ठण्डा कर लेना अच्छा होगा ।

मोटापे से ग्रसित लोगों को अक्सर त्वचा में जो धरियाँ पड़ जाती हैं, उन धारियों के गढ़े वाले भाग में पसीना इकट्ठा होकर सूखता है, जो सब तरह के चर्म रोंगों को जन्म देता है । जो मोटापे से ग्रसित होते हैं उनके शरीर से अधिक पसीना निकलता है, क्योंकि उनके शरीर में अधिक गर्मी होती है । ग्रीष्म ऋतु में दोपहर 11 से शाम 4 बजे तक गर्मी बहुत ही प्रखर होती है । अतः इस समय अधिक ताप से बचाव करना आवश्यक है । सबसे अच्छा तरीका यह है कि अपने अंदर के वस्त्रों को पूरी तरह गीला करके बाहर धूप में जा सकते हैं, ऐसा करने से बाहर की गरम हवा पहने हुए गीले कपड़े को पार करके शरीर पर लगने पर सूखकर ठंडक पहुँचती है, जिससे शरीर का तापमान बढ़ नहीं पाता और लू से पूरी तरह से बचाव हो जाता है । यह एक तरह का वातानुकूलन (AIR CONDITIONING) की बाहरी प्रक्रिया है, लेकिन साथ ही हमें प्रकृति के द्वारा दिये गये आंतरिक वातानुकूलन की प्रक्रिया का भी स्मरण रखना चाहिए । वह है सादे ठण्डे पेय पदार्थों का भरपूर सेवन, जिससे हमारे शरीर को वातानुकूलित रखने वाले यंत्र अर्थात् त्वचा के रोमकूप पूरी मात्रा में पसीना निकालकर शरीर के स्वाभाविक तापमान को पूरी तरह से सामान्य अवस्था में बनाये रखते हैं । ग्रीष्म ऋतु में अच्छा यही होता है कि दोपहर 12 बजे से लेकर सायं 4 बजे तक सूर्य ताप में सीधे रहने तक सूर्य ताप में सीधे रहने से बचें । घर के अंदर रहने पर आँखों में ठण्डक पैदा करने के लिये खीरे को टुकड़ों में काटकर उसे आंख बंद करके पलकों के ऊपर रखना चाहिए या ठण्डी मिट्टी की पट्टी अथवा गुलाब जल में भिगोया हुआ रुई का टुकड़ा भी बंद पलकों से ऊपर रखा जा सकता है । दोनों हथेलियों व पैर तलवों एवं सिर को ठण्डक पहुंचाने के लिये मेहन्दी को पीसकर उसका लेप लगाना बहुत ही अच्छा उपाय है ।

वातानुकूलित यंत्र (AIR CONDITIONING) पूरे घर अथवा हर कमरे में लगाना काफी महंगा कार्य है, अतः उसके बदले में खस की टट्टियाँ लगाकर कमरे को ठण्डा किया जा सकता है । ऐसा करने पर यह ध्यान रखना चाहिए कि खस की टट्टियाँ सूर्य की किरणों से सीधे पड़ने वाली खिड़कियों पर लगाये जायें, जिनमें पानी का डिछकाव उन टट्टियों के सुखने से पहले करते रहना चाहिए । ऐसा करने पर न केवल आपका कमरा ठण्डा रहेगा वरन् आप पूरे समय तक जब तक आप कमरे में हैं खस की भीनी खुशबू से आनन्दित होते रहेंगे ।

ग्रीष्मकाल के लिये प्रकृति ने पूरे शरीर में ठण्डक बनाये रखने के लिये बहुत सारे खाद्य पदार्थ पैदा किये हैं, ताकि हमारा शरीर सूर्य के अति ताप को सहन कर सके । ऐसे उपयुक्त खाद्य पदार्थों में तरबूज, अन्नानास, बेल, संतरा, मौसंबी एवं चकोतरा मुख्य रूप से आते हैं । इसके अतिरिक्त खीरा, ककड़ी, सिंघाडा कमल फल तथा करौंदा भी ठण्डक पैदा करने वाले खाद्य पदार्थ हैं । नींबू पानी, गेहूँ के घास का रस, नीम पानी एवं खीरा भी शरीर के ताप को सामान्य अवस्था में बनाये रखने के लिये उत्तम है । अन्नों में इन दिनों ज्वार - बाजरा, बारली, गेहूँ एवं हाथ कुटे चावल भी अपेक्षाकृत ठण्डक पैदा करने वाले खाद्य पदार्थ हैं । ग्रीष्म ऋतु में इन खाद्य पदार्थों की चर्चा करने बाद आम फल की चर्चा किये बिना ग्रीष्म ऋतु की खाद्य तालिका करना चाहिए, या यों कहें कि पूरे ग्रीष्म ऋतु में एक वक्त के भोजन में यदि आम की मात्रा 50 से 80: हो तो हमारे संपूर्ण स्वास्थ्य के लिये बहुत लाभकारी होगा । आम का प्रयोग करते समय यह सावधानी बरतनी चाहिए कि उसे प्रयोग के एक घण्टा पूर्व ठण्डे पानी में डुबा दिया जाये । यदि फल फ्रिज में रखा हुआ है तब आम को ठण्डे पानी में डुबाने की आवश्यकता नहीं है ।

उपरोक्त बातों का ध्यान रखने पर ग्रीष्म ऋतु की तपन भारी व त्रासदायी न होकर सुखद हो सकती है ।

सामार-प्रकृति किरण 2003-04

डॉ. ए.एस. गुरु गोस्वामी  
सदस्य छत्तीसगढ़, आयुर्वेदिक यूनानी एवं  
प्राकृतिक चिकित्सा बोर्ड रायपुर छत्तीसगढ़

# क्रान्तिकारी शक्ति (Revolutionary Force)

जिस भौतिकवाद को महामानव बुद्ध, सुकरात, प्लेटो, अरस्तू तथा चार्वाक लोगों ने जन्म दिया था, गैलिलियो, न्यूटन तथा फ़ैराडे ने पाल पोस कर बड़ा किया था, आइन्स्टीन ने उसे शून्य के भंवर में लाकर खड़ा कर दिया। आज वो ही भौतिकवाद शून्यवाद का पिछलग्गू बन गया। आजकल विश्व के भौतिकशास्त्री ब्रह्मवादियों के समान शून्य के भंवर में घिर गये। वैज्ञानिकों ने अपने परीक्षणों में अधिकाधिक ऐसी वस्तुओं के अस्तित्व को मान लिया जिन्हें देखना, सुनना, छूना, सूँघना या चखना सम्भव नहीं। उन वस्तुओं को ज्ञानेन्द्रियों से परे मानते हैं। एक ईच लम्बाई में 10 करोड़ अणु समा सकते हैं। अणु के परिवार में लेपटांस में अरबों परमाणु समा जाते हैं। जिस प्रकार ब्रह्मवादी 84 लाख योनियों में से गुजरने के बाद मनुष्य जन्म प्राप्त करने एवम् आवागमन के सिद्धान्त की धारणा की व्याख्या करते हैं, उसी प्रकार भौतिक शास्त्री शून्य में चक्कर खा रहे हैं। सैद्धान्तिक व्याख्या में वे क्रियात्मकता को भूल जाते हैं। अणु की व्याख्या में चराचर पदार्थ की अनदेखी कर रहे हैं। उन्हें मालूम होना चाहिए कि जितने अधिक शक्तिशाली यन्त्रों का विकास होता जायेगा, हमारी ज्ञानेन्द्रियों का विस्तार उतना ही बढ़ता जायेगा यानी हमारी अनुभूति का क्षेत्र भी विस्तृत होता जायेगा।

मनुष्य जितना अधिक शक्तिशाली अणुवीक्षण यंत्र बनाता जायेगा, अणु के उतने ही अधिक पर्दे खुलते जायेंगे। अणु का पदार्थ समाप्त नहीं होगा, वरन् उसकी सूक्ष्मता के बढ़ने से उसमें गतिशीलता बढ़ती जाती है। अतएव पदार्थ काय जगम नहीं वरन् चलायमान है। पदार्थ अचर अर्थात् जड़ नहीं वरन् चराचर का योग है। विज्ञान में यह एकाकारता का सिद्धान्त है, दर्शन में हमने इसको 'योगात्मक ऐकिकवाद' कहा है।

अब हम पदार्थ के विशाल काय की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। गैलिलियो ने अपनी प्रारम्भिक दूरबीन (Telescope) से सौर परिवार तथा एक ही आकाश गंगा का पता लगाया था। पिछली सदी तक वैज्ञानिकों ने ढाई सौ आकाश गंगाओं का पता लगाया था। वर्तमान दृष्टिकोण के अनुसार 15 करोड़ आकाश गंगाएँ हैं। एक आकाश गंगा में 10 करोड़ सूर्य समेत एक खराब नक्षत्र हैं। एक आकाश गंगा का व्यास दस हजार प्रकाश वर्ष (प्रकाश वर्ष = प्रकाश द्वारा एक वर्ष में पार की दूरी =  $9.4605 \times 10^{15}$  मीटर) है तथा एक सिरे से दूसरे सिरे के बीच की दूरी 20 लाख प्रकाश वर्ष है। छः अरब वर्ष पहले के विस्फोट द्वारा उत्सर्जित पदार्थ से आकाश गंगाएँ अस्तित्व में आई थीं। आकाश गंगाओं से जो प्रकाश हम आज प्राप्त कर रहे हैं वह छः अरब वर्ष पहले चला था। आधुनिक दूरबीन छः अरब प्रकाश वर्ष दूरी तक की आकाश गंगाओं को देख सकती है। आकाश गंगाओं के बीच में खाली स्थान (शून्य) भी देखा जाता है। आदमी जितनी अधिक शक्तिशाली दूरबीन का निर्माण करता जा रहा है, वह ब्रह्माण्ड के उतने ही अधिक भेद खोलता जा रहा है।

कुछ सालों पहले लोग आकाश गंगा के केन्द्र के बारे में कुछ नहीं जानते थे। बीस साल पहले ज्योतिर्विज्ञानियों ने आकाश गंगा के केन्द्र तथा उसमें होने वाले विस्फोट का पता लगाया। हमारे सूर्य से आकाश गंगा का केन्द्र 32600 प्रकाश वर्ष दूर है। आकाश गंगा के केन्द्र में होने वाले विस्फोट से उत्सर्जित प्रकाश को हम प्राप्त करते हैं जो धूल तथा गैसों को पार करके आता है।

नीदरलैंड के लीडन विश्व विद्यालय के जे० एच० ऊर्ट तथा जी० डब्लू० रागूर ने सन् 1960 ई० में आकाश गंगा के केन्द्र के विस्फोट से उत्पन्न दो महान उदजन भुजाओं का पता लगाया। इनमें से एक को तीन किलोपार्सेक भुजा कहते हैं जो हमारी ओर आ रही है और जिसने दस करोड़ सूर्यों के लिये पदार्थ मुहैया किया। दूसरी को उसके वेग पर 135 किलोमीटर प्रति सेकंड पुकारते हैं जो विरोधी दिशा में जा रही है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के कोलम्बिया विश्व विद्यालय

के केल्विन एच० प्रेन्डर गैस्ट तथा उसके सहकारियों ने अपनी खोजों से ऊंट एवम् रागूर का समर्थन किया और कहा कि आकाश गंगा के केन्द्र में 50 करोड़ वर्ष में एक विस्फोट होता है। हमारी आकाश गंगा के केन्द्र में विस्फोट के लिए  $3 \times 10^{58}$  अर्ग्स ऊर्जा की आवश्यकता होती है अर्थात् दस हजार सूर्यों का पूर्णतः ऊर्जा में परिवर्तित होना जरूरी है। जब आकाश गंगा के केन्द्र में विस्फोट के लिये दस हजार सूर्यों की ऊर्जा को आवश्यकता पड़ती है, तब ब्रह्माण्ड के केन्द्र में विस्फोट द्वारा आकाश गंगाओं को अस्तित्व में लाने के लिये कितने सूर्यों की ऊर्जा की आवश्यकता हुई होगी? ब्रह्मांड तथा आकाश गंगाओं के केन्द्रों में एवम् सूर्यों में विस्फोट करने के लिये ऊर्जा उत्पादन के कारखाने नहीं लगे हैं। अतः विस्फोट का सिद्धान्त आधारहीन है। ब्रह्मांड निर्माण का दूसरा सिद्धान्त 'यथा स्थिति' (Steady State) का है जिसके अनुसार यह मान्यता है कि संसार को हम जिस आकार में आज देखते हैं वह आरम्भ से ऐसा ही था। यहाँ पर हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिये कि संसार में सदैव स्थान परिक्रमण प्रभाव कार्य करता है। यह बड़ा जबरदस्त प्रभाव है। अतएव स्थान परिवर्तन अवश्यम्भावी है चाहे वह परिवर्तन करोड़ों वर्षों में हो। एक बात और ध्यान देने की है कि जब पदार्थ एक बार कोई आकार प्राप्त कर लेता है तो वह आकार उसकी विरासत बन जाता है। परन्तु फिर भी आकार का रूप परिवर्तन होता रहता है। अतः ब्रह्मांड के अस्तित्व के सम्बन्ध में "यथा स्थिति" का सिद्धान्त भी निर्मूल है। इस पुस्तक के तीसरे भाग में ब्रह्मांड के अस्तित्व में आने के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचन किया जायेगा।

एकाकारता के सिद्धान्त के अनुसार शून्य कहीं नहीं हैं। यदि शून्य कहीं प्रतीत होता है तो वह बनावटी है। अणु को नाभि में प्रोटान तथा इलेक्ट्रान के बीच में शून्य नहीं है और न आकाश गंगाओं के बीच में। इलेक्ट्रान अणुवीक्षण यंत्र तथा दीर्घ दूरबीन से जो क्रमशः अणु को नाभि तथा आकाश गंगाओं के बीच में हम शून्य देखते हैं, वह स्थान परिक्रमण प्रभाव के कारण दिखाई पड़ता है। हम अणुवीक्षण यंत्र तथा दूरबीन का प्रयोग करने में कुछ समय लगाते हैं, उतने समय में अणु कण एवम् आकाश गंगाएँ गतिशीलता के कारण परिक्रमा में आगे बढ़ जाती है। यही स्थान परिक्रमण प्रभाव है।

आकाश गंगाओं के अस्तित्व के बारे में मैं अपनी पुस्तक "मनुष्यत्व क्या है?" में लिखूंगा। अब हम क्रान्तिकारी शक्ति का विवेचन कर रहे हैं। जैसा हम पहले वर्णन कर चुके हैं कि ब्रह्मांड में लाखों करोड़ों आकाश गंगा हैं। आकाश गंगाएँ अपने केन्द्र की परिक्रमा कर रही हैं।

पानी आकसीजन तथा हाइड्रोजन का यौगिक है। पानी गर्म होने पर भाप बन जाता है। भाप में ओषजन तथा उदजनकरण पृथक नहीं होते। भाप के बादल बनते हैं। बादलों के घर्षण में उदजन तथा ओषजनकरण खंडित हो जाते हैं। इस विखंडन में स्थान परिक्रमण प्रभाव के कारण ज्वलनशील पदार्थ उत्पन्न होता है। यह पदार्थ गतिशील होता है जो एक शक्ति का कार्य करता है। यही क्रान्तिकारी शक्ति है जो आकर्षण के कारण अपने केन्द्र (पृथ्वी) की ओर भागती है और उसमें समा जाती है। बिल्कुल ठीक इसी प्रकार आकाश गंगाओं के परिक्रमण घर्षण से स्थान परिक्रमण प्रभाव के कारण ज्वलनशील पदार्थ (उदजन) की उत्पत्ति होती है। इसमें प्रकाश होता है और इस प्रकाश की महान गति होती है। प्रकाश का वेग विचार के वेग के बराबर होता है। ब्रह्मांड का केन्द्र एक महान आकर्षण क्षेत्र है। जो आकाश गंगाओं के घर्षण से उत्पन्न उदजन पदार्थ को विचार के वेग से अपनी ओर खींचता है। ब्रह्मांड के केन्द्र से उदजन आगार अर्थात् क्रान्तिकारी ऊर्जा पुंज (Revolutionary Energy Pack) निर्मित होता रहता है। यही क्रान्तिकारी शक्ति है जो ब्रह्मांड के जीवन में व्याप्त है। एवम् विश्व की तमाम शक्तियों का स्रोत है चाहे वह केन्द्रीय शक्ति हो या गुरुत्वाकर्षण शक्ति, विद्युत शक्ति हो या न्यूक्लियर शक्ति, चल शक्ति हो या सम्भावित शक्ति।

स्थान परिक्रमण प्रभाव के कारण बीज से पौधा उत्पन्न होता है। पौधों में कलियाँ निकलती हैं। कलियों में फूल उत्पन्न होता है। फूलों से फल बन जाता है। बार-बार क्रान्ति होती है। पल पल में क्रान्ति होती है। स्त्री पुरुष के प्रजनन अणुओं के संयोग से एक नया जीव बन जाता है। आदमी का बच्चा उत्पन्न हो जाता है। स्थान परिक्रमण प्रभाव के कारण क्रान्तिकारी शक्ति उत्पन्न होती है। स्थान परिक्रमण प्रभाव के कारण यूरेनियम से रेडियम बन जाता है। गंधक तथा रेडियम में ताप उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार विश्व के समस्त जीवन में क्रान्तिकारी शक्ति कार्य कर रही है।

सेम से मटर और मटर से चना नहीं बनता। जौ से गेहूँ और गेहूँ से धान नहीं बनता। बाजरे से ज्वार तथा ज्वार से मक्का नहीं बनता। इसी प्रकार लंगूर से बन्दर एवम् बन्दर से बनमानुष तथा बनमानुष से आदमी नहीं बनता। प्रकृति में जीवन के क्रमिक विकास का कोई उदाहरण नहीं है। बीज बनने पर पदार्थ जो रूप एक बार धारण कर लेता है, वह उसकी विरासत बन जाता है। अतएव जीवन क्रमिक विकास की प्रक्रिया नहीं है (*Life is not Evolutionary Process*) वरन् जीवन क्रान्तिकारी अंकुर है (*Life is Revolutionary off-shoot*)। अतएव डार्विन महोदय का जीवन क्रमिक विकास की प्रक्रिया का सिद्धान्त आधारहीन है। इस पुस्तक के दूसरे भाग में इस संबंध में विस्तृत रूप से प्रकाश डाला जायेगा।

ब्रह्माण्ड को केन्द्र क्रान्तिकारी शक्ति का भण्डार है। ब्रह्मांड के केन्द्र से कोस्मिक किरणें आकाश गंगाओं के केन्द्रों में आती हैं। आकाश गंगाओं के केन्द्रों से उदजन किरणें आकाश गंगाओं के सूर्यों तथा नक्षत्रों में आती हैं। सूर्यों में सूर्य किरण ग्रहों तथा उपग्रहों में आती हैं।

आकाश गंगाओं के केन्द्र तथा चमकीले तारे (सूर्य) प्रकाश किरणें प्राप्त करते हैं और प्राप्त किरणों को स्थान परिक्रमण प्रभाव के कारण पुनः प्रज्वलित कर अग्रेषण (Transmission) कर देते हैं। आकाश गंगाओं के केन्द्र तथा सूर्यों के धरातल स्थान परिक्रमण प्रभाव के कारण प्रकाश पुनर्प्रज्वलन केन्द्र (Light Transformer Centres) का कार्य करते हैं। प्रकाश पुनर्प्रज्वलन केन्द्रों में संयोजन (Fusion) तथा वियोजन (Fission) प्रक्रिया होती है। यह सब प्रक्रिया तत्काल हो जाती है। चमकदार तारे (सूर्य) प्रकाश सोखकर उसको अग्रसारित करते हैं जबकि चमकहीन तारे (नक्षत्र) प्रकाश का परावर्तन करते हैं? चमकदार तारे चमकते रहते हैं। चमकहीन तारे टिम टिम करते रहते हैं।

यहाँ पर सूर्य में संयोजन तथा वियोजन की प्रक्रिया के सम्बन्ध में प्रकाश डालना आवश्यक हो गया है क्योंकि सूर्य के धरातल अर्थात् प्लाजमा के संबंध में विश्व में बड़ी गलत धारणा फैली हुई है कि सूर्य का धरातल पदार्थ की चौथी अवस्था में है। ऐसा कहा जाता है कि छः हजार तथा उससे अधिक डिग्री तापक्रम पर कोई पदार्थ उसकी तीन दिशाओं ठोस, तरल तथा गैसों में से कुछ भी नहीं रहता अर्थात् समाप्त हो जाता है। गैस से भी कुछ और हो जाता है।

प्राचीनकाल के लोग सूर्य की देवता के रूप में पूजा करते थे। ब्रह्मवादी आज भी पूजते हैं और सूर्य ग्रहण पर बड़ा भारी दान करके पुण्य कमाते हैं। सूर्य के नाम पर दान करने पर मानो वह उनको मनोवांछित फल दे देता है। यूनानी तथा पारसी लोग सूर्य को आग का गोला समझते हैं, मानो वहाँ कोयले का भण्डार हो या लकड़ी का जंगल हो जिसमें आग लगी हो। गैलिलियो तथा न्यूटन तक लोगों की सूर्य के संबंध में ऐसी ही धारणा थी। जेम्स क्लर्क मैक्सवेल ने कहा कि प्रकाश विद्युत तरंग है। सूर्य से प्रकाश विद्युत चुम्बकीय विकिरण के माध्यम से आ रहा है। इन महाशय के अनुसार सूर्य धरातल पर किसी ने विद्युत पावर हाउस लगा रखा है जिससे सतत प्रकाश आ रहा है आइन्स्टीन महोदय के अनुसार सूर्य के धरातल पर अणु विखण्डन होता है और प्रकाश रेडियो विकिरण के माध्यम से आ रहा है। इनके विचार के अनुसार सूर्य में अणु

विखण्डन संयंत्र लगा है। इनके पश्चात् आधुनिक विज्ञानियों के अनुसार सूर्य के धरातल के ऊपर उद्जन गैसीय परमाणुओं का संयोजन हो रहा है और प्रकाश शक्ति के रूप में उत्सर्जित होता रहता है। इनके अनुसार सूर्य में उद्जन संयोजन संयंत्र लगा है। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित प्लाज्मा भौतिकी जर्नल के विज्ञानी लेखक सूर्य के धरातल को बीजगणित के बड़े लम्बे लम्बे सूत्रों में खोज रहे हैं। विश्व के विज्ञानियों ने 16 फरवरी सन् 1980 ई० के सूर्य ग्रहण के सम्बन्ध में बड़ी गलत 2 धारणायें फैलायी कि अंधेरी रात हो जायेगी, तारे चमकने लगेंगे, पक्षी अपने 2 घोंसलों की ओर भागने लगेंगे, आदमियों को नींद आने लगेगी, आदमी खुली आँखों से देखेंगे तो अंधे हो जायेंगे, सूर्य ग्रहण के समय आदमी बाहर निकलेंगे तो उन्हें यह हो जायेगा, वह हो जायेगा। इस प्रकार अनेक प्रकार की बातें हुयीं थी। भारत सरकार ने विज्ञानिकों की सलाह पर सरकारी दफ्तरों व कार्यशालाओं की आधे दिन की छुट्टी कर दी थी। अखबार वालों ने भी सिर फिरे लोगों की बहुत सी बातों (सूर्य ग्रहण के दुष्प्रभावों) को बड़ा तूल देकर प्रकाशित किया था।

इस सूर्य ग्रहण के समय मैंने भी प्रयोग किये। सबसे पहले मैंने सूर्य ग्रहण को नंगी आँखों से देखा। फिर बच्चे कहाँ मानने वाले थे? उन्होंने भी सूर्य ग्रहण को नंगी आँखों से देखा। फिर घर वालों के मना करने पर भी मैं ठेठ सूर्य ग्रहण के दौरान तीन बजे (सूर्य ग्रहण ढाई बजे शुरू हो गया था) के पश्चात् अपने जोधपुर निवास से त्रिपोलिया बाजार प्रेस तक चार मील का रास्ता नाप कर गया। घर से निकलते ही थोड़ा जंगल पड़ता है। मैंने देखा कि कबूतर गुटरगूँ कर रहे थे, अन्य पक्षी सामान्य दिनों की तरह किलो लकर रहे थे, पेड़-पौधों की पत्तियाँ हवा से मस्ती में झूम रही थी। सूअर भी अपने भोजन की तलाश में घूम रहे थे। मैंने देखा कि जब पशु-पक्षियों तथा पेड़-पौधों के ऊपर सूर्य ग्रहण का कोई असर नहीं तो मेरे ऊपर क्या असर होगा? मैं आगे बढ़ता गया। सड़के बिल्कुल सुनसान थीं। लोग अपने 2 घरों के दरवाजों से झाँक रहे थे। हाईकोर्ट रोड पर केवल एक दो तांगे तथा साईकिल वाले अपने घरों को भागते नजर आये। मेरे ऊपर किसी कोस्मिक किरण या अल्ट्रा-वायलेट किरण या गामा किरण या एक्स किरण का कोई असर नहीं हुआ। सूर्य के धरातल के सम्बन्ध में वैज्ञानिकों की बड़ी गलत धारणा बनी हुई है। वास्तव में सूर्य का अपना कोई प्रकाश नहीं है और सूर्य का धरातल मैग्नीफाइड काँच की तरह का है। आप यह पूछ सकते हैं कि क्या सूर्य में मैग्नीफाइड काँच बनाने का कारखाना लगा है? नहीं, सूर्य में मैग्नीफाइड काँच बनाने का कारखाना नहीं लगा वरन् सूर्य का धरातल आकाश गंगा का केन्द्र के प्रकाश से मैग्नीफाइड काँच के समान बन गया है। जिस प्रकार बालू रेत भीषण प्रकाश से मैग्नीफाइड काँच बन जाता है, उसी प्रकार सूर्य का धरातल मैग्नीफाइड काँच के समान बन गया। जिस प्रकार

बालू रेत भीषण प्रकाश से मैग्नीफाइड काँच बन जाता है, उसी प्रकार सूर्य का धरातल मैग्नीफाइड काँच के समान बन गया।

सूर्य आकाश गंगा के केन्द्र से आने वाली उद्जन किरणों को सोख कर (absorb) अर्थात् शोषण (exploit) कर उनकी शक्ति बहुगतिक (पुनः प्रज्वलित) कर जमीन पर प्रेषण अथवा अग्रेषण करता है। यह क्रिया ठीक उसी प्रकार होती है, जिस प्रकार शक्ति बहुगुणित कर प्रेषण करता है। सूर्य का धरातल बीज गणित के सूत्रों में ढूँढने से नहीं मिलेगा। यह विशुद्ध रूप से भौतिक तथा रसायन विज्ञान का विषय है, गणित का विषय नहीं। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय इंग्लैंड के विज्ञानी खामखा अपना समय बीजगणित के सूत्रों की उत्पत्ति में गँवा रहे हैं। यह सब गलत है कि पृथ्वी सूर्य से टूट कर अलग हुई और चाँद पृथ्वी से टूट कर अलग हुआ था। हजारों सालों से सूर्य से टूटकर और कोई पृथ्वी या चाँद नहीं बन रहा तो पहले कैसे बन सका होगा? विज्ञानियों की ये सब धारणायें ठोस प्रमाणों पर आधारित नहीं हैं।

मैंने मानव जाति के सामने सूर्य के सम्बन्ध में जो तथ्य प्रस्तुत किये हैं, उनके आधार पर हम पृथ्वी पर सूर्य के समान ही प्रत्येक घर के ऊपर लघु सूर्य बना सकते हैं। वह कैसे? जितेन्द्र, धर्मेन्द्र, शैलेन्द्र तथा योगेन्द्र नाम के मेरे चार पुत्र हैं। यह बात मैंने अपने पुत्रों से पुस्तक के छपने के दौरान सीखी। मैंने एक दिन अपने वरांडे में बहुत से कार्बन तथा सफेद कागज जले हुये पड़े देखे। बच्चों ने सूर्य के प्रकाश से कागजों को जला कर उनमें जगह 2 छेद बना रखे थे। मैंने अपने चारों पुत्रों को बुलाकर पूछा कि तुम यह गन्दगी क्यों फैलाते रहते हो? उन्होंने कहा कि हम सूर्य की शक्ति का प्रयोग कर रहे हैं और सूर्य की किरणों से ये कागज जलाते रहते हैं। मैंने उनसे पुनः पूछा कि तुमने इन कागजों को कैसे जलाया? तो उन्होंने बताया कि हमारे पास मोटा काँच का टुकड़ा है जिसे बड़े भाई साहब जितेन्द्रजी अपने स्कूल से लाये थे, उससे हम इन कागजों को जलाते हैं। यद्यपि हम भी बचपन में मोटे काँच के टुकड़ को सूर्य की किरणों के सामने रखकर रूई को जलाकर आग उत्पन्न करते थे। परंतु फिर भी मेरी उत्सुकता बनी रही और मैंने उनसे उनका प्रयोग अपने सामने करने को कहा। उन्होंने अपना प्रयोग दोहराया और कागज में आग लगा दी। उन छोटे बच्चों की अक्ल पर मुझे आश्चर्य हुआ और मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। क्योंकि जिस चीज को मैं बहुत दिनों से ढूँढ रहा था, वह मुझसे पहले मेरे बच्चों ने ढूँढ ली। मैंने उनसे कहा कि इस प्रकार तुम जमीन पर छोटा सूर्य बना रहे हो। मैंने खुश होकर उन्हें प्रयोग करने के लिये एक नया मैग्नीफाइड काँच खरीद कर लाकर दे दिया। अतएव इस प्रयोग के आधार पर हम घर घर सौर पावर हाउस लगा कर घरेलू कार्यों के लिये घरेलू उद्योग धंधों के लिये सस्ते में सौर ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं। घर घर में सौर चूल्हा लगा

सकते हैं। घर घर में ट्यूब वैल लगाये जा सकते हैं। विज्ञानियों को अपना दृष्टिकोण बदलना होगा।

अगर आदमी को कुछ सीखना है तो वह सूर्य से सीखे। सूर्य अन्य की शक्ति को प्राप्त कर उसे समाप्त नहीं करता। वरन् उसे पुनःशक्तिमान कर देता है। वह उसका शोषण कर (खून चूसकर) समाप्त नहीं करता वरन् अपनी शक्ति भी शोषित को दे देता है। यह है संसार में प्रकृति के प्रेम की बेमिसाल मिसाल। पृथ्वी में हम लोग छोटा सा बीज डालते हैं, पृथ्वी उसे बड़ा भारी वृक्ष बना देती है जो आदमी के लिए बड़ा लाभकारी होता है। प्रकृति प्रेममय है। जहां हाथी रहता है, वहाँ चींटी भी रहती है। अतएव योग्यतम की उत्तर जीविता (Survival of the fittest) का सिद्धान्त त्रुटिपूर्ण है। कमजोर लोगों को भी जीने का अधिकार है। इसलिये संसार के कारखानेदारों तथा धनपतियों का यह परम पुनीत कर्तव्य है कि वे अपने कर्मचारियों को फलने फूलने का अवसर दें। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि जब आदमी सौर ऊर्जा का दोहन करना सीख जायेगा एवम् प्रकृति की अन्य अथाह शक्तियों का शोषण करना सीख जायेगा तो हम अपने भाइयों का शोषण करना बन्द कर देगा। लड़ाई-झगड़े बन्द हो जायेंगे। आदमी शांति की ओर बढ़ता जायेगा। मानव जाति की पताका सूर्य के ऊपर फहरायेगी। विश्व में मानववाद की विजय होगी।

अब यह बात असंदिग्ध रूप से कही जा सकती है कि समस्त ब्रह्माण्ड में क्रांतिकारी शक्ति कार्य कर रही है। ब्रह्माण्ड केन्द्र का प्रकाश समस्त संसार में व्याप्त है। प्रकाश में पदार्थ एवम् गति दोनों हैं। इन दोनों का एकाकार क्षेत्र है। पदार्थ व गति एकाकार हैं। एक दूसरे से भिन्न नहीं है। प्रकाश के वेग पर पदार्थ चलता है। प्रकाश के वेग पर पदार्थ का अस्तित्व समाप्त नहीं होता। अतएव आइन्स्टीन महोदय की मान्यताओं एवम् सापेक्षवाद के सिद्धान्त का कोई औचित्य नहीं है। पदार्थ अनन्त है, उसकी गति अनन्त है। एकाकार क्षेत्र की कोई सीमा नहीं है। यह विशाल है, यह अनन्त है। उसके तीन या चार कोई आयाम नहीं। पदार्थ व गति, स्थान व समय (Space and Time) के सातत्य से भी सीमित नहीं। स्थान व समय भी उसके क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

अब हमने देख लिया कि समस्त ब्रह्मांड में शून्य क्षेत्र कहीं नहीं। अगर कहीं शून्य क्षेत्र है तो वह बनावटी है उसका निर्माण हमने अपनी सुविधा के लिए किया है। दहाई सैकड़े तथा हजार आदि के अंक व उनके गुणनफलों (अपवर्त्यों) के साथ हमने शून्य अपनी सुविधा के लिये लगाया है। शून्य आदमी की सेवा के लिये है न कि आदमी शून्य की पूजा के लिये।

साभार :  
शिक्षा के अहिंसक क्रांति  
पेज संख्या XIII से LVI तक  
मूलचन्द्र विद्यार्थी

## गणतंत्र आर्मी

गणतंत्र आर्मी संगठन द्रविड़ भारत समाचार पत्र द्वारा संचालित किया जायेगा।

गणतंत्र का मुख्य उद्देश्य "लोगो के बीच ज्ञान का प्रसार करने के लिए" विद्वान लोगो की सेना का निर्माण अर्थात् संगठन करना।

वेद्वान/ज्ञानी कौन है ?

ज्ञानी वह प्राणी है जिसने प्राणियों के जीवन को बचाने का काम किया है। यहाँ पर शैक्षिक योग्यता अर्थात् किताबी जानकारी से नहीं है, ढाढ़ाई से नहीं है।

आपके अनुभव/अनुसंधान से है।

जैसे — किसान, जवान, मजदूर, शोधकर्ता और परिस्थितियों से लड़ाई जीतने वाले लोग।

आप सभी से अनुरोध है कि प्राणियों के दुखों का निवारण करने के लिए संगठन को विस्तार प्रदान करें यथा संभव तन-मन से सहयोग प्रदान करने का प्रयास करें।

धन्यवाद!

सहयोगाकांक्षी  
उमेश्वरी देवी  
सम्पादक द्रविड़ भारत

# बाबासाहब का 'वह' विधान उनकी हत्या का कारण बन गया।

बाबासाहब 1936 से 1956 तक बौद्ध धर्म स्वीकार करने की तैयारी कर रहे थे। 1956 का वर्ष उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार करने के चुना। कारण उस समय बुद्ध को जन्मे 2500 वर्ष पूरे हो गये थे। 14 अक्टूबर की तारीख इसलिए चुनी गई की उस दिन दशहरा भी था। पुष्यमित्र शुंग ने जब प्रतिक्रांति की तब उसने बौद्ध राजा और बौद्ध भिक्षुओं का नरसंहार किया। बौद्ध धर्म समाप्त प्रायः करने के लिए ब्राह्मणों ने युक्ती, बुद्धि, तर्क और चर्चा का सहारा नहीं लिया परंतु घूसखोरी (भ्रष्टांत्र) और षडयंत्र का सहारा लिया। पुष्यमित्रने प्रतिक्रांति करने के बाद रामायण और महाभारत की रचना कराई। रामायण में राम-रावण युद्ध दर्शाया। रावण का एक सिर न बताकर दस सिर बताये गये। और राम के हाथों उसका वध होता है इसलिये 'दशहरा' कहा गया है। 'दशहरा' इसका अर्थ दस सिर जिसमें हैं अर्थात् रावण को हराया (वध किया) परन्तु उसके दस सिर क्यों हैं? ब्राह्मणों ने प्रतिनिधि काऊन्टर (डिप्लोमैटिक पालीसी) के रूप में यह संकल्पना (मिथक) का उपयोग किया। बौद्ध अनुशासन में त्रीशरण, पंचशील, अष्टांगिक मार्ग, दस पारमिता है। युरेशियन ब्राह्मण ने षडयंत्र करके वो दस पारमिताएं नष्ट कर दिया और उसी के प्रतीक रूप में राम ने दस सिर वाले रावण का सर्वनाश किया ऐसा प्रचार किया। और जिस दिन यह षडयंत्र उसने किया, वह दिन था आश्विन महीने का दसवाँ दिन अर्थात् आश्विन दशमी। सम्राट अशोक ने जिस दिन बौद्ध धर्म स्वीकार किया अर्थात् उसने स्वतःपर ही विजय प्राप्त किया इसलिये उसे अशोक विजयदशमी कहते हैं। वह दिन सैकड़ों वर्ष लोक-उत्सव के रूप में मनाया जाता रहा। परंतु ब्राह्मण ने प्रतिक्रांति कर वह प्रेरणा नष्ट कर दी। उसके बदले 'दशहरा' बैठा दिया। बाबासाहब ने उसी दिन धर्म परिवर्तन कर पुनः सम्राट अशोक की महान परंपरा पुनर्जीवित की।

दिनांक 24 अक्टूबर 1956 का वह क्षण इतना अद्वितीय था कि, संसार के लोग आश्चर्य व्यक्त करने लगे। उस दिन 6 से 7 लाख लोगों ने धम्मदीक्षा ग्रहण की। बौद्ध धर्म स्वीकार करने के कारण बाबासाहब का आंदोलन अब अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुका था। परन्तु टाईम्स आफ इंडिया समाचार पत्र को वह कार्यक्रम इतना खटका की, उसने केवल 75 हजार लोग उपस्थित थे, ऐसा झूठा समाचार छपा। इतना ही नहीं तो **केसरी** और **सकाल** की कटिंग सविताबाई ने सिम्बायसिस के दालन में लगा दिया जिससे लोग भ्रमित हुये। इस हरकत से भी सविताबाई की लायकी का पता लगता है। सविताबाई यहीं नहीं रुकी बल्कि जिस समाचारपत्र में '**हरीजन बौद्ध हो गये**' ऐसा विकृत समाचार छपा, उसका संग्रह सविताबाई ने सिम्बायसिस में संग्रह करके रखवा दिया। इसके साथ ही टाईम्स आफ इंडिया के सात दिसम्बर के अंक में 'Mr. Nehru Tribute to Harjan Leader' ऐसा गैर संवैधानिक शब्दों का प्रयोग कर स्वाभीमानी आंदोलन का अपमान किया।

बौद्ध धर्म स्वीकार करने से पूर्व ही बाबासाहब ने बौद्धों के प्रतीक, संकल्पना प्रत्यक्ष रूप में साकार करना आरम्भ कर दिया था। बुद्ध जयंती मनाना आरम्भ कर दिया। जागतिक बौद्ध सम्मेलन में भारत में बौद्ध धर्म की वापसी पर उनकी चर्चा बहुत व्यापक थी। बौद्ध धर्म, यह भारतीय धर्म है और इसी धर्म से हमारा कल्याण होगा। परन्तु बौद्ध धर्म की स्वीकृति ब्राह्मणों की आँखों में शूल बनकर चुभ रही थी। इसमें सभी तरह के ब्राह्मणों का समावेश था। कुछ अज्ञानी लोग, नेहरू को बुद्ध बहुत प्रिय थे, ऐसा बरगलाते हैं। परन्तु उसमें कोई तथ्य नहीं है। नेहरू को बौद्ध राजा व तथागत बुद्ध के प्रति भयंकर द्वेष था। इसीलिये नेहरू शंकराचार्य को विशेष सहूलियतें देकर कुम्भ मेले में धन लुटा रहे थे। स्वयं को धर्म निरपेक्ष कहने वाला नेहरू सनातनी था। एक बार बाबासाहब ने एक सभा में कहा था। यह नेहरू कुम्भ मेले में सरकारी धन खर्च करता है, मैं यदि मंत्री होता तो नेहरू को जेल में सड़ा देता। एक बार तो नेहरू को ठाणे में मानसिक रूग्णालय में रखो, ऐसा भी व्यंग बाबासाहब ने किया था। नेहरू **ब्राह्मणीराज्य** स्थापित कर रहे थे और वैसा करने के लिये उसने सब प्रकार से प्रयत्न किया।

नेहरू और राधाकृष्णन का बौद्ध धर्म के प्रति द्वेष का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है। 1956 में भारत सरकार बुद्ध जयंती मनाने वाली थी। नेहरू, बौद्ध राष्ट्रों के लिये एक नाटक करने वाले थे। सरकार बुद्ध पर कुछ विद्वानों के ग्रंथ प्रकाशित करने वाली थी। नेहरू का यह कार्य बुद्ध के प्रति आस्था दर्शाना मात्र एक ढोंग था। यह ढोंग को उजागर करने वाले कुछ प्रमाण हमारे पास है। बाबासाहब ने दिनांक 14 सितम्बर, 1956 को पत्र लिखा और बताया की, 'बुद्ध और उनका धम्म' यह ग्रंथ तैयार है। वह ग्रंथ सरकार ने बुद्ध जयंती के अवसर पर छापकर बौद्ध राष्ट्रों के प्रतिनिधियों को भेंट दें। परन्तु नेहरू को अंदाज आ गया की, बाबासाहब आम्बेडकर के ग्रंथ भी ब्राह्मणवाद के लिए घातक हैं। नेहरू ने ऐसे गैरे व्यक्तियों की निष्क्रीय कलाकृतियों पर पैसे खर्च किये परंतु बाबासाहब के उस ग्रंथ के लिये फंड खत्म हो गया है ऐसा कहा। परंतु बुद्ध जयंती समिति के अध्यक्ष डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के पास विचारार्थ तुम्हारा पत्र भेज दिया है, यह उत्तर दूसरे दिन ही भिजवा दिया। उधर! सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने बाबासाहब का ग्रंथ प्रकाशित करने से साफ इन्कार करते हुये कारण बताया की फंड नहीं बचा है। नेहरू को यह बात भली प्रकार मालूम थी की बाबासाहब शीघ्र ही बौद्ध धर्म स्वीकार करने वाले हैं। नेहरू ब्राह्मण और सर्वपल्ली भी ब्राह्मण। वे बुद्ध को अवतार मानते थे। और बौद्ध राष्ट्रों को मूर्ख बनाने के लिये दुष्ट हेतु से प्रेरित होकर कुछ पुस्तकें छपी जा रही थीं। इस घटना से नेहरू और राधाकृष्णन का बुद्ध के प्रति और बाबासाहब के प्रति कितना तिरस्कार था यह प्रगत होता है।

जब बाबासाहब ने लाखों अनुयाईयों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार किया तब नेहरू और राधाकृष्णन को अच्छी तरह समझ में आ गया कि अब भारत में पुनः बौद्ध धर्म के आगमन से वैदिक धर्म जड़मूल से उखड़ जायेगा। इसीलिये इसी मंडलीने यह दुष्प्रचार शुरु किया की अस्पृश्यो ने बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बाद उनको प्राप्त सुविधायें खत्म हो जायेंगी। कांग्रेस धर्मांतरण के भयंकर परिणामों का अनुभव करने लगी थी। पूरे ढाई हजार वर्षों के बाद डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ने प्रतिक्रांति को मुंह तोड़ उत्तर दिया था। ब्राह्मणी धर्म पर वह जबरदस्त जख्म था। उस समय और उसके बाद कांग्रेस को उस घटना के स्मरण मात्र से यातना होती थी। उदा. जब धर्मांतरण के 25 वर्ष पूर्ण हो गये तब बाबू जगजीवन राम को साथ में लेकर उसके विरोध में प्रचार करने के लिये लगा दिया। जगजीवन राम ने बयान दिया की, मैं भी अब धर्मांतरण करूंगा और इस्लाम धर्म कबूल करूंगा। धर्मांतरण के बाद मेरा नाम जहांगीरखान होगा, ऐसा भी घोषित किया। यह प्रतिक्रिया कांग्रेस की ओर से और इंदिरा गांधी के इशारे पर थी।

बौद्ध धर्म स्वीकारना, यह नेहरू और ब्राह्मण जाति के लिये बहुत बड़ा जख्म था। कांग्रेस और संघ परिवार को बहुत यातना हुई। सावरकर जो प्रारम्भ से ही बाबासाहब के धर्मांतरण की घोषणा के विरोध में जहर उगल रहे थे, नरक उगल रहे थे, वे सभी ब्राह्मण एक हो गये। अनौपचारिक पद्धति से कांग्रेस सहित सब एक जुट हो गये थे, बौद्ध धर्म स्वीकारने के बाद हम राजकीय जीवन में भी आमूलाग्र बदल लायेंगे, व्यापक आधार पर हमारा राजकीय पक्ष होगा बाबासाहब की इस भूमिका से शंकराचार्य और नेहरू अस्वस्थ हो गये थे।

इन घटनाओं के पश्चात नवम्बर 1956 में काठमांडू (नेपाल) में बौद्ध धर्म परिषद में डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर भाषण देने गये। ठीक उसी समय बाबासाहब के विरोध में एक मुकदमे का नतीजा कांग्रेस ने ही लगाने का आदेश दिया, ताकी वे अपना दौरा रद्द कर सकें। ऐसी ब्राह्मणवादियों की इच्छा थी। बाबासाहब काठमांडू अंततः गये ही और वहाँ उन्होंने एक मौलिक विषय पर भाषण दिया। बाबासाहब उस परिषद में चर्चा व आदर का विषय बन गये थे। बाबासाहब ने वहाँ एकत्रित सभी बौद्ध राष्ट्रों के प्रतिनिधियों से अपील की कि 'बौद्ध धर्म अपनी भूमिपर पुनः वापस आ गया है।' उन्होंने पिन पॉइन्ट आवाहनही किया—

“आज इस सम्मेलन सत्र के उद्घाटन के अवसर पर इस समारोह में उपस्थित संसार के बौद्ध, विशेषकर बौद्ध भिक्षुओं से प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने भारतीय बौद्ध बंधुओं की रक्षा करें। उनको धर्म के सदाचरण की शिक्षा दें। कई सदियों के बाद उन्होंने अपने पुरखों के धर्म को पुनः अपनाया है। उन्हें हिन्दुओं के अमानवीय अत्याचारों से बचाना होगा। सभी हिन्दू किसी न किसी रूप में, यहाँ तक कि अनिश्चरवादी होते हुए भी, बामणवाद मानते हैं। इसलिए बौद्ध धर्मावलम्बी गरीब जनता उन सब के कोप की भागीदार बनेगी। **अगर मुझे मेरे गिरते हुए स्वास्थ्य ने साथ दिया और मैं जीवित रहा तो दो वर्षों के अन्दर मैं सारे भारत को बौद्धमय बना दूँगा।**” बाबासाहब का यही विधान अंत में उनकी मृत्यु का कारण बन गया।

इसलिये युरेशियन ब्राह्मणों को जल्दी से जल्दी डॉ. बाबासाहब की हत्या करना आवश्यक लगने लगा। बाबासाहब ने बार बार यह घोषणा की थी कि, “बौद्ध धर्म की लहर (लाट) अब पुनः वापस नहीं जायेंगी” ब्राह्मणी धर्म को इसी बौद्ध विचारधारा से धोखा था। ब्राह्मणों को यदि डॉ. आम्बेडकर जीवित रहे तो भयंकर धोखा लगने लगा था। कारण 1954 में ब्रह्मदेश की जागतिक बौद्ध परिषद में उन्होंने अपनी योजना प्रस्तुत की थी। 1956 तक उन्होंने उस पर अमल भी किया था। उसी के अनुसार बुद्धिस्ट बायबल (1) 'बुद्ध और उनका धर्म' ने उसकी पूर्ति भी की (2) भिक्षु संघ की पुनर्स्थापना की योजना (3) बौद्ध धर्म से ब्राह्मणवाद को अनुकूल होने वाली बातें दूर करना (4) धर्म के प्रचारकों का निर्माण करना (5) मद्रास, मुम्बई, नागपुर और दिल्ली इन चार महत्वपूर्ण शहरों में बौद्ध केंद्र विहार का निर्माण करना, इत्यादी महत्वपूर्ण बातें थी। अंत में एक संदेश भी उस प्रसंग में दिया गया था की, “बौद्ध धर्म का ब्राह्मण ही सबसे बड़ा शत्रु है। ब्राह्मण यह किसी पक्ष में जाये, या कोई भी रूप वह धारण करे तब भी वह ब्राह्मण ही रहता है। कारण वह वर्ण व्यवस्था पर आधारित सामाजिक असमानता कायम रखना चाहता है।” ब्राह्मण स्वयं आगे बढ़कर वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था नष्ट करने को कभी तैयार नहीं होगा। ब्राह्मणों को बौद्ध धर्म में घुसपैठ नहीं करने देना। यदि घुसपैठ करने का अवसर मिला तो वे (पुनः) बौद्ध धर्म नष्ट कर देंगे।

काठमांडू के दौरे तक उन्होंने बौद्ध धर्म की पुनर्स्थापना के लिए संपूर्ण योजना तैयार कर दी थी। 16 दिसम्बर, 1956, को मुम्बई में महाविशाल धर्मदीक्षा कार्यक्रम निर्धारित किया गया था। इसके बाद उत्तर प्रदेश, पंजाब, मद्रास, बिहार, के साथ-साथ विभिन्न राज्यों में ये लहर फैलने वाली थी। पहले पड़ाव में एससी, एसटी, के लोग इस धर्म में धर्मांतरित करने वाले थे। और उनके पश्चात ओबीसी लोगों को भी अपने मूल धर्म का परिचय करा देने वाले थे। उत्तर प्रदेश में ओबीसी ने बौद्ध धर्म स्वीकार करने के लिए कुछ बैठकें ली थी। ब्राह्मण जातियों को यह आकलन करने के लिये समय नहीं लगा। बाबासाहब के साथ ब्राह्मणों की गुप्तचर सविताबाई थी। पिछले आठ वर्षों से वह यही कार्य कर रही थी। अंत में जहरीला डंक मारा (ही) और ब्राह्मणवादियों का षडयंत्र सफल हो गया।

हजारों वर्ष के बाद बहुजन समाज को इतना महान व दृढ़ नेतृत्व मिला है, इसलिये ब्राह्मणों को भय लगने लगा था। बाबासाहब पुनः प्रतिक्रांति समाप्त करके क्रांति स्थापित करेंगे, इसकी भी समझ उन्हें हो गई थी, वे बहुजन समाज को शासक बनायेंगे। शासक बनाने के लिए उनका मार्गदर्शन और विचारधारा तैयार है। ब्राह्मणवादियों को पुनः ब्रह्मद्रथ की हत्या का स्मरण हो गया। और उन लोगों ने बहुजनों के महापुरुष डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर की हत्या को अंजाम तक पहुंचा दिया।

साभार :

बाबा साहब आम्बेडकर की हत्या किसने, क्यों और कैसे की  
पू.सं. 195 से 199 तक।  
लेखक : विलास खरात

## परिशिष्ट 4

# श्री गांधी के आमरण पर बी. आर. अम्बेडकर द्वारा जारी किया गया बयान

गोलमेज सम्मेलन में अस्पृश्यों तथा उनकी संवैधानिक संरक्षण की मांग के प्रति श्री गांधी के रवैये के संबंध में बयान, दिनांक 19 सितम्बर, 1932

समाचार पत्रों में छपे श्री गांधी तथा सर सेमुएल होर और प्रधानमंत्री के मध्य हुए पत्र व्यवहार पर मुझे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। दलित वर्ग के लिए सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व की योजना को अंग्रेज सरकार अपनी इच्छा से अथवा जनमत के दबाव से संशोधित नहीं करती है अथवा योजना को वापस नहीं लेती उस पर श्री गांधी ने आमरण अनशन करने का संकल्प व्यक्त किया है, उसे पढ़कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। श्री गांधी ने इस प्रकार की घोषणा कर मुझे जिसे जिस नाजुक परिस्थिति में डाल दिया, उसकी सहज में ही कल्पना की जा सकती है।

मैं सोचता हूँ कि श्री गांधी जिन्होंने गोलमेज सम्मेलन में सांप्रदायिक प्रश्न से उत्पन्न इस मुद्दे को व्यापक विषय की छोटी सी बात कहा था, जान की बाजी कैसे लगा बैठे। वास्तव में, यदि श्री गांधी के दृष्टिकोण को शब्दबद्ध किया जाए तो सांप्रदायिक प्रश्न भारतीय संविधान का मुख्य अध्याय न होकर परिशिष्ट मात्र है। यदि श्री गांधी इतना बड़ा कदम देश की स्वतंत्रता प्राप्त के लिए उठाते, तो इसका औचित्य होता, जिसके लिए वह गोलमेज सम्मेलन में बराबर बल देते गए विशेष प्रतिनिधित्व को ही अलग करके आत्म-बलिदान का बहाना ले रहे हैं। पृथक निर्वाचन केवल दलित वर्गों के लिए ही नहीं स्वीकार किया गया है, बल्कि भारतीय ईसाइयों, एंग्लो - इंडियनो यूरोपियों, मुसलमानों और सिखों के लिए भी स्वीकार किया गया है। जमींदारों, मजदूरों और व्यापारियों के लिए भी पृथक निर्वाचन स्वीकार किया गया है। श्री गांधी ने मुसलमानों और सिखों के अतिरिक्त अन्य सभी वर्गों और धर्मावलंबियों के विशेष प्रतिनिधित्व का विरोध किया था। अब श्री गांधी ने सबको छोड़ कर केवल दलित वर्गों को स्वीकृत विशेष पृथक निर्वाचन को समाप्त करने का अपना मुख्य मुद्दा बनाया।

मेरे विचार में, श्री गांधी ने दलित वर्गों के प्रतिनिधित्व की व्यवस्था के परिणामों के विषय में, जो आशंका प्रकट की है वह शुद्ध काल्पनिक है। यदि मुसलमानों और सिखों को पृथक निर्वाचन मिल जाने से राष्ट्र को खंडित होने का खतरा नहीं है, तो दलित वर्गों को पृथक निर्वाचन दे देना हिंदू समाज का खंडित होना नहीं कहा जा सकता। श्री गांधी के सोच के अन्य संप्रदायों के लिए विशेष निर्वाचन की व्यवस्था कर दी जाए, तो शायद राष्ट्र खंडित न होगा।

मुझे पूरा विश्वास है कि बहुतों का यह मत है कि स्वराज संविधान के अंतर्गत बहुसंख्यक दल के अत्याचारों को देखते हुए, किसी वर्ग को अपने राजनीतिक अधिकारों की सुरक्षा की आवश्यकता है तो वह वर्ग है दलित वर्ग। यह एक वर्ग है, जो निस्संदेह अपने अस्तित्व के संघर्ष को जीवित रखने की स्थिति में नहीं है। जिस धर्म से वे बंधे हुए हैं, वह उन्हें सम्मानित स्थान देने के बजाए कुष्ठ रोगी कहता है जो व्यवहार बर्ताव के योग्य नहीं। आर्थिक स्थिति ऐसी है कि दलित वर्ग दो जून की रोटी जुटाने के लिए सवर्ण हिंदुओं पर निर्भर करता है। न केवल उनके जीवन के सभी मार्ग हिंदुओं के पूर्वाग्रह के कारण बंद हैं, बल्कि हिंदू समाज द्वारा सदा प्रयत्न किया जाता है कि सारे दरवाजे बंद कर दिए जाएं, ताकि दलित वर्ग को अवसर न मिल पाए कि वे ढंग से जी सकें। वास्तव में यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि प्रत्येक गांव में सवर्ण हिंदू आपस में विभाजित हैं परन्तु उन दलित वर्गों को जो वहां कम संख्या में हैं और बिखरे हुए हैं निर्दयता से दबाने के लिए सदा षडयंत्र रचते हैं।

ऐसी परिस्थितियों में सभी समझदार और निष्पक्ष

व्यक्ति यह स्वीकार करेंगे कि ऐसी जाति के लिए संगठित अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष करके सफलता प्राप्त करने के लिए एकमात्र रास्ता है कि उनको राजनीतिक अधिकार देना परम आवश्यक बनाया जाए।

मुझे यह सोचना चाहिए था कि दलित वर्गों के हितचिंतक को एड़ी चोटी का जोर लगा कर उन्हें नए संविधान से अधिक से अधिक राजनीतिक अधिकार दिलाएं। परन्तु श्री गांधी के सोचने के ढंग ही निराले हैं जो मेरी समझ से परे हैं। दलित वर्गों को सांप्रदायिक फ़ैसले के अंतर्गत, जो अधूरे राजनीतिक अधिकार दिए गए हैं, वह न केवल उन्हें बढ़ाए जाने का प्रयत्न कर रहे हैं, बल्कि अपनी जान की बाजी लगा कर, जो कुछ अधिकार उन्हें मिले हैं, उनसे भी वंचित करने पर तुले हैं। दलित वर्गों के राजनीतिक अस्तित्व को पूरी तरह तबाह करने का यह श्री गांधी का पहला प्रयत्न नहीं है। बहुत पहले अल्पसंख्यक समझौता हुआ था। श्री गांधी ने मुसलमानों और कांग्रेस के मध्य समझौता कराने का प्रयत्न किया। मुसलमानों ने जो चौदह मांगें प्रस्तुत की थीं, उनको श्री गांधी ने इस बात पर समर्थन देने की पेशकश की थी कि उनके बदले में दलित वर्गों के लिए उन्होंने सामाजिक प्रतिनिधित्व के जो दावे रखे हैं, उनका विरोध करने के लिए मुसलमान श्री गांधी के साथ दें।

मुस्लिम प्रतिनिधियों को यह श्रेय जाता है कि उन्होंने ऐसी काली करतूत में श्री गांधी का हाथ बंटाने से इंकार कर दिया और दलितों को मुसलमानों और श्री गांधी द्वारा उत्पन्न संभावित स्थिति से बचा लिया।

सांप्रदायिक पंचाट के प्रति श्री गांधी का विद्रोह मेरी समझ में नहीं आता। वह कहते हैं कि इसके द्वारा दलित वर्ग सवर्ण हिंदू समाज से अलग कर दिए गए हैं। दूसरी ओर डाक्टर मुंजे, जो हिंदुओं के बहुत जबर्दस्त समर्थक हैं और उनकी वकालत करने वाले प्रमुख व्यक्ति हैं, के विचार इस विषय में बिल्कुल भिन्न हैं। लंदन से वापस आने के बाद डा. मुंजे ने जितने भाषण दिए हैं, उनमें उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि सांप्रदायिक निर्णय दलित वर्गों को हिंदुओं से पृथक नहीं करता। वास्तव में इस बात की शेखी बघारते हैं कि उन्होंने मुझे हिंदुओं से दलित वर्ग को राजनीतिक ढंग से अलग करने के प्रयत्नों में पराजित कर दिया। मुझे यकीन है कि डा. मुंजे सांप्रदायिकता की सही व्याख्या करते हैं। यद्यपि मैं इस बात में यकीन नहीं करता हूँ कि इसका श्रेय डा. मुंजे को जाता है, इसलिए यह बड़े आश्चर्य की बात है कि श्री गांधी सांप्रदायिक व्यक्ति नहीं, वरन् राष्ट्रीय व्यक्ति कहे जाते हैं। दलित वर्गों से संबंधित सांप्रदायिक निर्णय का वह अर्थ लेते हैं, जो डा. मुंजे जैसे सांप्रदायिक व्यक्ति के ढंग से बिल्कुल विपरीत है। यदि डा. मुंजे की दृष्टि में सांप्रदायिक निर्णय से दलित वर्गों के लोग हिंदुओं से अलग नहीं हो जाएंगे तो श्री गांधी को भी उस व्याख्या से संतोष कर लेना चाहिए था।

मेरे विचार में, सांप्रदायिक निर्वाचन में केवल हिंदुओं को ही नहीं संतुष्ट हो जाना चाहिए, वरन् दलित वर्गों के उन लोगों को भी संतुष्ट हो जाना चाहिए, जैसे-राव बहादुर राजा, श्री बालू और गवई, जो संयुक्त निर्वाचन के पक्ष में हैं। विधान सभा में श्री राजा के गर्जन-तर्जन ने मुझे बहुत आश्चर्यचकित कर दिया। पृथक निर्वाचन के कट्टर समर्थक और सवर्ण हिंदुओं के अत्याचारों के कटुतम आलोचक होते हुए भी अब यह संयुक्त निर्वाचन के पक्षधर और हिंदुओं के प्रेमी हो गए हैं। इसमें कितना हाथ उन्हें गोलमेज सम्मेलन में शामिल न किए जाने का है और कितना ईमानदारी से विश्वास बदल लेने का, मैं इस पर बहस नहीं करना चाहता।

श्री राजा सांप्रदायिक पंचाट की जिस ढंग से आलोचना कर रहे हैं, उसके दो बिंदु हैं, एक तो यह कि

दलित वर्गों को जनसंख्या के अनुपात में, जितनी सीटें मिलनी चाहिए, सांप्रदायिक पंचाट में उससे कम सीटें हैं और दूसरे यह कि सांप्रदायिक पंचाट से दलित वर्ग के लोग हिंदुओं से अलग हो जाएंगे।

मैं उनकी पहली चिंता से सहमत हूँ, परन्तु गोलमेज सम्मेलन में दलित वर्गों का प्रतिनिधित्व जिन लोगों ने किया है, उन पर दलित वर्ग के अधिकार बेचने का राव बहादुर द्वारा दोषारोपण करने पर मुझे कहना पड़ता है कि जब वह इंडियन सेंट्रल कमेटी के सदस्य थे, तब उन्होंने क्या किया था? उस कमेटी की रिपोर्ट में दलित वर्गों को मद्रास में 150 सीटों में से दस सीटें, बम्बई में 14 में से 8 सीटें, बंगाल में 200 में से 8 सीटें, संयुक्त प्रांत में 182 में से 8, पंजाब में 166 में से 6 सीटें, बिहार और उड़ीसा में 150 में से 6 सीटें, मध्य प्रांत में 125 में से 8 सीटें और असम में दलित वर्गों और आदिमजातियों को 75 में से 9 सीटें मिली थीं। मैं इस बयान पर और कुछ नहीं कहना चाहता कि सीटों का उपरोक्त बंटवारा कहां तक जनसंख्या के अनुपात से मेल खाता है। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि यह बंटवारा दलित वर्गों के यथोचित प्रतिनिधित्व बहुत कम है। स्वयं राजा जी सीटों के उस बंटवारे में एक पक्ष थे। सांप्रदायिक पंचाट की आलोचना करने से पहले राजा साहेब को अपनी स्मृति को झंझोड़ कर देखना चाहिए कि उन्होंने इंडियन सेंट्रल कमेटी में बिना कोई विरोध किए सीटों के उस बंटवारे को दलितों की ओर से कैसे स्वीकार कर लिया? राजा साहेब के अनुसार यदि जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व का सिद्धांत दलित वर्गों का प्राकृतिक अधिकार था, तो उस अधिकार की सुरक्षा करना नितांत आवश्यक था। परन्तु प्रश्न यह है कि राजा साहेब ने सेंट्रल कमेटी में उस पर क्यों नहीं जोर दिया जब कि ऐसा करने के लिए उन्हें अवसर भी मिला था?

उनके कथन से कि सांप्रदायिक पंचाट में दलित वर्गों को सवर्ण हिंदुओं से अलग कर दिया गया है, मैं सहमत नहीं हूँ। यदि राजा साहेब को वास्तव में पृथक निर्वाचन पर कोई आपत्ति है, तो पृथक निर्वाचन में उम्मीदवार के रूप में खड़े होने के लिए उन पर कोई दबाव नहीं डालेगा। राजा साहेब पूरे जोरों से दलित वर्गों को विश्वास दिलाते हैं कि अब दलित वर्गों के प्रति सर्वर्ण हिंदुओं का हृदय परिवर्तन हो गया है। उन्हें यह प्रमाणित करने का अवसर मिलेगा, सामान्य निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित होने पर भी दलित वर्गों के लोगों को अभी उनकी जबानी जमाखर्ची पर विश्वास नहीं है। हिंदू दलित वर्गों के प्रति जो प्रेम और सहानुभूति जता रहे हैं उन्हें भी राजा साहेब को सामान्य निर्वाचन क्षेत्र से विधानमंडल में भेजने का अवसर मिलेगा। वे तब अपनी ईमानदारी का परिचय दें।

इसीलिए मेरे विचार से जो लोग पृथक निर्वाचन के पक्ष में हैं तथा जो संयुक्त निर्वाचन के पक्ष में हैं, दोनों को सांप्रदायिक पंचाट ने से संतुष्ट कर दिया है। इस अर्थ में एक समझौता है। इसे ज्यों का त्यों सबको मान लेना चाहिए। जहां तक श्री गांधी की बात है, मैं नहीं जानता कि वह क्या चाहते हैं? ऐसा समझा जाता है कि यद्यपि श्री गांधी पृथक निर्वाचन प्रणाली के विरुद्ध हैं तथापि वह संयुक्त निर्वाचन और सीटों के संरक्षण के विरोध में नहीं हैं। यह बहुत बड़ी भूल है। आज उनके विचार कुछ भी हों, जब वह लंदन में थे, तब किसी ऐसी व्यवस्था के पूर्णतया विरुद्ध थे, चाहे वह संयुक्त निर्वाचन अथवा पृथक निर्वाचन के संबंध में हो। वयस्क मताधिकार पर आधारित सामान्य निर्वाचन में मत देने के अधिकार के अतिरिक्त श्री गांधी विधान सभाओं में प्रतिनिधित्व देने की अस्पृश्योंकी मांग को मानने के लिए तैयार नहीं थे। यह वह स्थिति थी, जो श्री गांधी ने पहले अपनाई थी। गोलमेज सम्मेलन की समाप्ति पर श्री गांधी ने मुझे एक योजना सुझाई थी,

जिसके लिए उन्होंने कहा था कि वह उस योजना पर विचार करने के लिए तैयार हैं। यह योजना पूर्णतया परंपरागत थी, जिसकी कोई संवैधानिक मान्यता नहीं थी। उस योजना के अंतर्गत निर्वाचन कानून के अनुसार एक भी सीट दलित वर्गों के लिए सुरक्षित नहीं रखी गई थी। यह योजना इस प्रकार थी -

दलित वर्ग के उम्मीदवार सामान्य निर्वाचन में, अन्य सवर्ण हिंदू उम्मीदवारों के मुकाबले में खड़े हो सकते हैं। यदि दलित उम्मीदवार सामान्य निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव हार जाए, तो वह इस आधार पर चुनाव याचिका दायर कर सकता है कि उसे अस्पृश्य होने के कारण पराजित कर दिया गया है। यदि इस आधार पर अस्पृश्य उम्मीदवार के पक्ष में फैसला हो जाता है, तो श्री गांधी ने कहा कि वह कुछ हिंदू सदस्यों को सीट दिलाने के लिए त्यागपत्र देने के लिए कहेंगे। तब दुबारा चुनाव होगा। उस चुनाव में सवर्ण हिंदू उम्मीदवार के विरुद्ध वह अथवा अन्य अस्पृश्य उम्मीदवार खड़ा होकर अपना भाग्य आजमाएगा। यदि यह दुबारा चुनाव हार जाता है, तो वह पुनः उसी आधार पर चुनाव याचिका दायर करेगा कि उसे अस्पृश्य होने के कारण हरा दिया गया है और यह सिलसिला बेरोकटोक चलता रहेगा। मैं इन तथ्यों को इसलिए उजागर कर रहा हूँ कि कुछ लोगों को अब भी भुलावा है कि संयुक्त निर्वाचन तथा आरक्षित सीटों से ही श्री गांधी की आत्मा को शांति मिल जाएगी। मैं इसीलिए इस बात पर जोर दे रहा हूँ कि जब तक श्री गांधी की ओर से कोई वास्तविक प्रस्ताव सामने नहीं आते, इस प्रश्न पर विचार करना व्यर्थ है।

कुछ भी हो मैं यह बता देना चाहता हूँ कि मैं श्री गांधी तथा उनकी कांग्रेस के आश्वासनों पर विश्वास नहीं कर सकता कि वे आवश्यक कदम उठाएंगे। मैं अपने लोगों के संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न को परंपराओं और आश्वासनों के भरोसे नहीं छोड़ सकता। श्री गांधी अमर व्यक्ति नहीं हैं और कांग्रेस पर कोई ऐसा नैतिक दबाव नहीं है, जो उनकी बात सदैव ब्रह्म वाक्य मान कर चले ही। भारत में बहुत से महात्मा आए, जिनका एकमात्र उद्देश्य अस्पृश्यता मिटाना और अस्पृश्यों का उद्धार करना था। सभी महात्माओं को असफलता हाथ लगी। महात्मा लोग आए और चले गए, लेकिन अस्पृश्य सदैव अस्पृश्य ही बने रहे।

मुझे हिंदू सुधारकों तथा उनके द्वारा किए जाने वाले सुधारों के बारे में महाद और नासिक के आंदोलनों से काफी अनुभव हुआ है, जिनसे मैं कह सकता हूँ कि दलित वर्गों का कोई ऐसा हितचिंतक नहीं है, जो उन्हें उनके ऊपर किए जाने वाले बर्बर अत्याचारों से छुटकारा दिला

कर उन्नति के पथ पर अग्रसर कर सके। ऐसे समाज-सुधारक जो मुसीबत के क्षणों में अपने भाई-बंधुओं की भावना को ठेस पहुंचाने की अपेक्षा समाज सुधार के अपने सिद्धांतों को ही तिलांजलि दे देते हैं, दलित वर्गों के लिए बेकार हैं।

इसलिए मैं अपने लोगों की सुरक्षा के लिए वैधानिक गारंटी चाहता हूँ। यदि श्री गांधी सांप्रदायिक पंचाट में परिवर्तन कराना चाहते हैं, तो उन्हें चाहिए कि वह अपने ऐसे प्रस्ताव सामने लाएं और सिद्ध करें कि उनके प्रस्ताव सांप्रदायिक पंचाट द्वारा दी गई गारंटी की अपेक्षा बेहतर गारंटी देते हैं।

मुझे आशा है कि श्री गांधी ने जो अतिवादी कदम उठाने की ठानी है, वह उसका विचार छोड़ देंगे। जब हम पृथक निर्वाचन की मांग करते हैं, तो इसका अर्थ यह नहीं कि हम हिंदू समाज को हानि पहुंचाना चाहते हैं। यदि हम पृथक निर्वाचन की मांग कर रहे हैं, तो हम ऐसा इसलिए करना चाहते हैं कि हमारी असहाय जनता सवर्ण हिंदुओं की दया पर ही निर्भर रहने के लिए न छोड़ दी जाए। श्री गांधी की तरह हमें भी गलती करने का अधिकार है और हमें आशा है कि वह हमें अपने उस अधिकार से वंचित नहीं करेंगे। उनका आमरण अनशन का इरादा किसी और अच्छे कार्य के लिए हो, तो बड़ी अच्छी बात होगी। आमरण अनशन जैसे अतिवादी कार्य यदि वह हिंदू-मुसलमान दंगों के विरोध में करते अथवा अन्य किसी राष्ट्र हित में करते, तो इसका कुछ अर्थ समझ में आता। श्री गांधी का यह अनशन निश्चित रूप से दलित वर्गों की दशा में कोई सुधार नहीं ला सकता। श्री गांधी चाहे यह जानते हों अथवा नहीं, उनके इस अनशन का परिणाम होगा, सारे देश में उनके अनुयायियों द्वारा दलित वर्गों के प्रति आतंकवाद।

इस तरह का दबाव दलित वर्गों को हिंदू समाज से नहीं जोड़ सकता, अलग होने से नहीं रोक सकता, यदि वे उस समाज से बाहर जाने का संकल्प कर लें। यदि श्री गांधी दलित वर्गों से हिंदू-धर्म तथा राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने - दो में से किसी एक का चुनाव करने के लिए कहें, तो मेरा पूरा विश्वास है कि श्री गांधी को अनशन से बचाने हेतु दलित वर्ग के लोग राजनीतिक अधिकार प्राप्त करना ही पसंद करेंगे। यदि श्री गांधी अपने इस कदम के परिणामों के विषय में ठंडे दिमाग से विचार करें, तो मुझे संदेह है कि उन्हें उल्लेखनीय विजय प्राप्त होगी। यह अब भी ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बात है कि ऐसे प्रतिक्रियावादी और अनियंत्रित शक्तियों को श्री गांधी छूट

सेवा में,	
नाम .....	
पता .....	
.....	
.....	

देकर हिंदू जाति और दलित वर्गों के मध्य नफरत की भावना को और उत्तेजित करेंगे और दोनों वर्गों के बीच की खाई को और चौड़ा करेंगे। गोलमेज सम्मेलन में जब मैंने श्री गांधी का विरोध किया था, तब देश में मेरे विरुद्ध काफी हुल्लड़ मचा था और अपने को राष्ट्रीय समाचार पत्र कहने वाले अखबारों ने मुझे राष्ट्रीय हित में अड़ंगा डालने वाला देशद्रोही करार देने का षड़यंत्र रचा था और मेरी पार्टी के विरुद्ध होने वाली सभाओं के समाचारों को बढ़ा-चढ़ा कर छापते थे, हालांकि कुछ सभाएं होती ही नहीं थी। दलित वर्गों में पारस्परिक विभेद करने के लिए रिश्त का खुल कर लालच दिया गया। कुछ हिंसक वारदातें भी की गईं।

यदि श्री गांधी उपरोक्त सभी प्रकार की बातों की बड़े पैमाने पर पुनरावृत्ति नहीं चाहते, तो भगवान के लिए अपने निर्णय पर फिर से विचार करें और विनाशकारी परिणामों से बचाएं। मुझे विश्वास है कि श्री गांधी ऐसा नहीं चाहते हैं। परंतु यदि वह अपना आमरण अनशन नहीं छोड़ते, तो उनके न चाहते हुए भी इसके दुष्परिणाम उसी प्रकार निश्चित हैं, जिस प्रकार दिन के बाद रात का आना निश्चित होता है।

यह बयान समाप्त करने से पहले मैं जनता को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि यद्यपि मैं समझता हूँ कि बात अब समाप्त हो चुकी है, परंतु तब भी मैं श्री गांधी द्वारा लाए गए प्रस्तावों पर विचार करने के लिए तैयार हूँ। मैं समझता हूँ कि श्री गांधी मुझे इस बात के लिए बाध्य नहीं करेंगे कि मैं उनके जीवन तथा अपने निस्सहाय लोगों के अधिकारों में से किसी एक को चुनूँ, क्योंकि भविष्य में अपने लोगों की आने वाली पीढ़ियों को हथकड़ी और बेड़ी में जकड़ कर पड़े रहने के लिए मैं कभी नहीं कहूँगा।

साभार :

डा. अम्बेडकर संपूर्ण वाङ्मय खंड 16  
पेज संख्या 323 से 329 तक  
बाबा साहेब

## केन्द्रीय शक्ति की खोज (यूरोप में पुनर्जागरण)

सर्व प्रथम धरती की गति को लीजिये। प्राचीनकाल में लोगों का विश्वास था कि पृथ्वी स्थिर है और वह सब वस्तुओं का केन्द्र है। आकाशी पिंड सूर्य, चांद, ग्रह तथा नक्षत्र चल रहे हैं। ग्रीस के पाइथागोरस ने कहा कि पृथ्वी केन्द्रीय भाग (सूर्य) के चारों ओर घूम रही है। सोलहवीं शती के आरम्भ में कोपरनिकस ने यूनान के सिसेरो तथा हाइसेटस के विचारों को पुनर्जीवित किया कि पृथ्वी अपनी धुरी की परिक्रमा कर रही है। उसने अन्य ग्रहों तथा उपग्रहों की गति का पता लगाया। सौर परिवार की जानकारी हुई। सूर्य को सब वस्तुओं का केन्द्र तथा उसे स्थिर एवम् सब शक्तियों का मूल स्रोत माना जाने लगा।

गैलिलियो ने कोपरनिकस के विचारों का समर्थन किया। उसने पिसा के चर्च की छत से एक मन तथा एक पौंड का बाट गिराने पर पता लगाया कि दोनों प्रकार के वजन एक साथ पृथ्वी पर गिरते हैं। दोनों वजनों की गति समान हुई। चर्च की छत में जोर से बंधे हुये दीपक की भूलन को देखकर गैलिलियो ने पता लगाया कि भूले में लटका हुआ वजन अधिक हो या कम, भूले की भूलन

(बांग) लम्बी हो या छोटी, एक सा समय लेती है। गैलिलियो के मतानुसार शक्ति केन्द्र की ओर अवश्य कार्य करती है। इस शक्ति को केन्द्रीय शक्ति कहते हैं। यह शक्ति गुरुत्वाकर्षण शक्ति से कुछ कुछ मिलती जुलती है। गैलिलियो को गुरुत्वाकर्षण शक्ति का आभास हो गया था। गैलिलियो की खोजों का अध्ययन करने पर न्यूटन गुरुत्वाकर्षण शक्ति की खोज करने में सफल हुआ।

गैलिलियो के कथानुसार पदार्थ की गति समय के साथ है : वेग = समयांक (V = at) जड़त्व गुण के कारण गतिमान पदार्थ का चलना तब तक जारी रहेगा जब तक कि विरोधी शक्ति अर्थात् केन्द्रीय शक्ति (घर्षण शक्ति = Friction Force) उस पदार्थ को रोकती नहीं। केन्द्रीय शक्ति का क्षेत्र बहुत छोटा होता है। यह शक्ति कृश नाभिक शक्ति से मिलती-जुलती है जो पृथ्वी तथा ब्रह्मांड के अन्य भागों पर भारी तत्वों के अस्तित्व के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है। गैलिलियो के अनुसार पदार्थ को गतिमान रखने के शक्ति आवश्यक है। तात्पर्य यह है कि गति तथा पदार्थ अलग-2 है। गैलिलियो ने अपनी खोजों

से किश्चियन हाईगेंस, देकार्त तथा न्यूटन के लिए रास्ता साफ कर दिया।

उच्च वैज्ञानिक किश्चियन हाईगेंस के अनुसार गति की तीव्रता गति के वर्ग तथा अर्द्ध व्यास के अनुपात में है। अतः शक्ति = संहति x गति का वर्ग / अर्द्ध व्यास अर्थात्  $\frac{1}{2}mv^2 = fs$  जिसके तहत गतिमान ऊर्जा (vis viva) कृत कार्य के बराबर है। यहाँ पर m = mass (संहति),  $v^2 = \text{square of velocity}$  (गति का वर्ग), f = force (शक्ति), s = space (दूरी)।

देकार्त ने पदार्थ तथा गति व जड़ पदार्थ तथा विचारशील मस्तिष्क के आवश्यक अन्तर को स्पष्ट किया और द्वैतवाद का प्रतिपादन किया।

साभार :

शिक्षा के अहिंसक क्रांति  
पेज संख्या XII से XIV तक  
मूलचन्द्र विद्यार्थी